हादसाते-हयात

मजमूआ-ए-गजल गजल सग्रह



शाइर

निसार अहमद 'अनजान' बैस

हादसाते–हयात

मज्मूआ-ए-ग़ज़ल   ग़ज़ल सग्रह

निसार अहमद 'अनजान' बैंस
कायमखानियो की मस्जिद के पास
मोहल्ला कुचीलपुरा
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

प्रकाशक	आफताब प्रकाशन, बीकानेर
सस्करण	मई 2003
सख्या	पाच सौ प्रतिया
मूल्य	125 रुपये
मुद्रक	रोशन प्रिण्टर्स, कुचीलपुरा, बीकानेर फोन 542883

Haadsaat-e-Hayaat
Ghazal Collection *Rs 125/-*
by Nisar Ahmed 'Anjan Bains

हादसातें-हयात में शामिल गजलो की तरतीब

चंद अल्फाज़

उठे क़दम, जो तेरी सिम्त तो रुके जाकर–
जहाँ पे दार थी कैदो-क़फस या वीराने।

मगर चलना जरूरी समझा, सिर्फ यही धुन लिये कि
अब फर्क रहना चाहिये न खासो-आम में–
बदलाव लाना चाहिये कुहना निजाम में।

नतीजतन
ये दर्द ही हमको तो विरासत मे मिला है–
तुम देख लो क्या हमको मुहब्बत मे मिला है ?

फिर भी ज़िन्दगी से कोई शिकवा-शिकायत किये बगैर बस यही तमन्ना दिल मे है
ज़मीं जब तलक बन नहीं जाती जन्नत–
मैं ले न सकूंगा कहीं पर भी राहत।
मैं मुर्दों में इक ज़िन्दगी फूंक दूंगा–
मैं कमज़ोर हाथो को बख्शूंगा ताक़त।

चाहे फिर
सिला मिले न मिले हमको बागबानी का–
ज़माना देख ल आँखो से गुलफिशानी का।

'हादसाते-हयात' के बारे मे अपनी तरफ से इतना लिखना भी शायद जरूरत से ज्यादा ही है, बाकी पढने वालो और तनकीदनिगारो पर मुनहसिर है कि इस किताब को किस नजरिये से लेते है।

किताब की इशाअतो-तबाअत के लिये दिगर यारो-अहबाब के साथ ही रोशन प्रिण्टस व आफताब प्रकाशन के साथियो और सरे-वरक (टाइटल) के नक्काश जनाब मानवेन्द्र कुमार बगरहट्टा का तहे-दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।

—'अनजान बीकानेरी

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

इन्तिसाब (समर्पण)

जन्नतनशीं वालिदे माजिद मोहतरम शहजादखाँ बैंस और वालिदा माजिदा मोहतरमा जीयाँ उर्फ बिस्मिल्लाह के नाम जिनकी शफकतो–तर्बियत की बदौलत खाकसार में शे'रो–सुखन की जानिब बचपन ही से लगाव पैदा हुआ और आखिरश मज्मूआ–ए–गजल 'हादसाते–हयात' किताब की सूरत में मन्जरे–आम पर आ सका।

साथ ही खुदा–ओ–रसूल के फज्लो–करम का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ कि वालिदैन के इन्तेकाल के बाद भी हम चारो भाइयो और खानदान के तमाम लोगो के बीच बाहमी इत्तेफाको–मुहब्बत का रिश्ता आज तक दायमो–कायम है और मेहनतो–मशक्कत के साथ जिन्दगी बसर करने का जज्बा दिलो में मौजूद है।

—निसार अहमद 'अनजान' बैंस

पहले-पहल जो पाव उठा राहबर हुआ-
थोडी जो दूर साथ चला हमसफर हुआ।

दे-दे सदायें हार गये, खामोश हो गये-
दस्तक से जख्मी हाथ हुए, वा न दर हुआ।

सन्नाटा मौत का सा क्यो पसरा है शहर मे-
दर पेश ऐसा हादसा कब पेशतर हुआ ?

अपने हैं सारे लोग पराया कोई नही-
अपनो से अपनी जान का क्यों आज डर हुआ ?

कैदो-कफस की सख्तिया हम झेल आये हैं-
राहतपजीर फिर भी न हमको घर हुआ।

जो तुख्म मिल के मिट्टी मे रूपोश हो गया-
बरसो के बाद उसको जो देखा शजर हुआ।

अनजान सरबुलन्द रहे कत्लगाह मे-
कातिल के खौफ का न दिल पर असर हुआ।

❀

कौन कोहे-तूर पर पाया रहे, जागा रहे–
जब भी सोचें दिल में तू ही जलवा दिखलाता रहे।

मयकदा तो अभी इस दौर में गर है तो क्या–
साग़रे-पिंदार मुसलसल दौर चलाता रहे।

फ़ायदा क्या चेहरा की ज़र्दी में निखार में है–
आईना अपना तो क्या बेसूद दिखलाता रहे।

ख़ूने-नाहक़ के निशां मिटते नहीं हैं याद रख–
बारहा दामन तू क़ातिल अपना धुलवाता रहे।

या न हों ये दस्तरस से पत्थरों में दर कभी–
चाहे तू 'आजाज' सर पटके या भुनभुनाता रहे।

तकरार न शरारतें, न अब शबाब है–
गोया गुरूबे-वक्त का आफताब है।

जब देखने की ताब रही न निगाहो मे–
क्या कीजियेगा हुस्न अगर बेहिजाब है।

तुम सर की इस सियाही के धोके मे न रहो–
बालों मे आजकल वो लगाता खिजाब है।

बस एक वो ही आदमी है आज काम का–
सीने मे जिसके आग तो आंखो मे आब है।

दीवाना कल का आज नजूमी है दोस्तो–
सच कह रहा है जिन्दगी बस एक ख्वाब है।

अनजान मंजिलो का निशा किस तरह मिले–
हर मीरे-कारवान की हालत खराब है।

❀

सरफरोशी की आरजू लेकर–
सू-ए-मकतल चले हैं दीवाने।

अब तो हर सू सुनाई देते हैं–
उनकी दीवानगी के अफसाने।

खुद ही जुल्फे-दराज में उलझे–
लोग जो–जो गये थे सुलझाने।

अपने आंचल का डाल दो साया–
धूप अब तो लगी है झुलसाने।

सिर्फ सन्नाटा सासें बुनती हैं–
बढते जाते हैं दिल के वीराने।

हम ही अनजान कुछ नहीं समझे–
अहले–दानिश लगे थे समझाने।

गमे-तनहाई से घबराये तो महफिल मे आये थे-
है अब महफिल से उकताये हुए जाये कहा यारो ?

शुआए नूर की जिन-जिन दरीचो से निकलनी थी-
जरा सोचो उन्ही से उठ रहा है क्यो धुआ यारो ?

लुटेरे ही लुटेरे है सभी चौराहो पर काबिज-
कहा पायेंगे हम ऐसे मे मजिल का निशा यारो ?

यहा तो कोई हिन्दू है, कोई सिख-पारसी-मुस्लिम-
जहा इन्सान बसते हो, वो बस्ती है कहा यारो ?

दीवाली ईद-होली पर जहा हम दिल से मिलते थे-
क्यो ठहरे है रुकावट कौनसी है दरम्या यारो ?

हमारी जान जाती है तुम्हारी शोखिया ठहरी-
लिये जाते है क्या ऐसी अदा से इम्तेहा यारो ?

यही तो वक्त है कि प्यार के दो बोल तो बोलो-
खुदा ने किसलिये दी है तुम्हे मुह मे जुबा यारो ?

चलो कसकर मिलें शायद न फिर मिलना मुयस्सर हो-
जो पल हैं हाथ मे अपने क्यो जाये रायगा यारो ?

जमाना याद रखेगा जिसे अनजान सदियो तक-
हम अपने खून से लिखेंगे ऐसी दास्ता यारो ?

꧁

वाकिफ नही जमाने के चालो-चलन से हम–
हाँ, आश्नाई रखते हैं दारो-रसन से हम ।

अहले-वतन यकीन करें या कि न करें–
जा-दिल से प्यार करते है, अपने वतन से हम ।

गो थक चुके हैं, पावो मे छाले हैं बेशुमार–
चलने का वक्त आये तो चल दें मन से हम ।

दिल है कि फिर कही भी किसी ढब नही लगा–
उठने को उठ तो आये थे उस अन्जुमन से हम ।

फरहादे-कोहकन के जुनू पर हैं हम फिदा–
वाबस्ता कब रहे है किसी दिलशिकन से हम ।

तुम देखते कि दौरे-असीरी के बावजूद–
रूदादे-इश्क लिखते रहे बाकपन से हम ।

उनसे लिपट के रोये न 'अनजान' आज तक–
लेकिन लिपट के रोते हैं गौरो-कफन से हम ।

❀

महरूम मंजिलो से है राहो में जिन्दगी–
यूं ही न बीत जाये पडावो मे जिन्दगी ।

हर–हर कदम पे हादसे होते है शहर मे–
महफूज होगी शायद गावो मे जिन्दगी ।

यू चल पडे थे घर से किसी को तलाशने–
अब तक बिता रहे है छलावो मे जिन्दगी ।

कल जो बुलंदियो के सतायशगरो मे थे–
अब वो बिता रहे है गुफाओ मे जिन्दगी ।

सरजद कोई गुनाह, हुआ ही नही मगर–
क्यो खत्म हो रही है सजाओ मे जिन्दगी ?

तुम चाहो तो सुकूने दिलो–रूहो–जा मिले–
ले लिजियेगा अपनी पनाहो मे जिन्दगी ।

होटो पे गीत है न तरन्नुम है सासो मे–
अनजान बीत जाये न आहो मे जिन्दगी ।

सारे शिकवे-गिले भुला डालो–
जख्म जो-जो मिले मिटा डालो।

पाया-ए-अर्श तक हिला डालो–
कुछ असर ऐसा, ऐ दुआ ! डालो।

आज अपना उसे बना डालो–
दिल मे जो कुछ भी है बता डालो।

चेहरे पे पर्दा-ए-हया डालो–
कही दुनिया को न जला डालो।

जुल्फ को सायां-सा बना डालो–
आग को बाग-सा बना डालो।

पत्थरो तक को गुदगुदा डालो–
हसने वालो को यू रुला डालो।

वरना 'अनजान' मरने वाला है–
तुम अगर चाहो तो जिला डालो।

❀

हर शख्स परेशान है इस दौर मे यारो–
किस-किसकी परेशानी मे शामिल हुआ जाये ?

हर सिम्त नजर आते है बिखरे हुए खण्डहर–
तामीर का आगाज कहा से किया जाये ?

उठती है यहा रोज तमन्नाओ की अर्थी–
किस एक की अर्थी को सहारा दिया जाये ?

हर एक के होटो पे है रूदाद गमो की–
दिल रखने को किस-किसका फसाना सुना जाये ?

मत पूछिये जो रज मुहब्बत मे मिला है–
जो जख्म है सीने मे उसे कैसे भरा जाये ?

अनजाम तलब दीद की अब दिल मे नही है–
आंखो मे तलब है भी तो क्या किया जाये ?

❀

घने अंधेरे मे नन्हा दीया ही, काफी है–
सहारा पाने को तिनका मिला ही, काफी है।

न रास दैर ही आया, न जो हरम मे लगा–
हमारे वास्ते अब मयकदा ही, काफी है।

तुम्हारी यादो के साये हमारे साथ रहे–
सुलगते सहरा मे ये आसरा ही, काफी है।

नही जवाब दिया, उसकी मौज है यारो–
हमारे यार ने खत तो पढा ही, काफी है।

बकौले–गैर वो 'अनजान' है खफा हमसे–
हमारा करते तो है तजकरा ही, काफी है।

❀

[11]

जब उन्हे पहली बार देखा था–
जाने क्यो बार–बार देखा था।

फिर निगाहो ने कुछ नही देखा–
यू उन्हे पहली बार देखा था।

पाव दीवानगी मे बढते गये–
खित्ता–ए–खारजार देखा था।

कोई राहे-फना मे साथ न था–
साया तक तो फरार देखा था।

हमकदम कोई हमसफर न हुआ–
हमने सबको पुकार देखा था।

दार तक वो ही खीच लाया है–
ख्वाबे-दीदारे-यार देखा था।

रूह अनजान है तरो-ताजा–
जिस्म तो तार-तार देखा था।

❀

इस जगह धूप है न साया है-
किस जगह दिल हमे ले ग्राया है ?

जख्म ग्रब तक न भरने पाया है-
तीर कुछ ऐसा हमने खाया है।

काबिले-इश्क बिलयकी है वो ही-
शिद्दते-गम मे जो मुसकुराया है।

ग्रब रिहाई फिजूल है यारो-
कि कफस हमको रास ग्राया है।

हम हैं तैयार हर सजा के लिये-
दिल किसी का ग्रगर दुखाया है।

हिचकिया बध गई ग्रभी से क्यो-
हाले-दिल कब ग्रभी सुनाया है।

हमने अनजाम साफ देखा है-
जिस्म होने तलक ही साया है।

ॐ

ज्यों-त्यों कर दिन बीत गया है–
रात मगर घिर आई है ।

भीड़ मे गुम रहता हूं दिन भर–
रात मे फिर तनहाई है ।

सूरज आग उगलता दिन भर–
रात मे ठंडक छाई है ।

अलल-सुबह तो धूप खिली थी–
शाम मगर धुंधलाई है ।

दिन भर जिसके पीछे दौड़ा–
रात मे इक परछाई है ।

रोक-टोक दिन होने तक है–
रात मगर पगलाई है ।

मुर्गे की कुकड़ू-कू सुनकर–
रातरानी कुम्हलाई है ।

जान कहीं 'अनजान' न ले ले–
दर्द ने ली अंगड़ाई है ।

❀

खुले दरीचो से अब कोई देखता ही नही-
उदास चेहरो पे मुसकान फेंकता ही नही।

मैं उसके दर पे कभी सर को टेकता ही नही-
जो मेरा दिल मुझे उस दर पे भेजता ही नही।

मैं आग-पानी से हर्गिज भी खेलता ही नही-
जो खाकसारी से हर गम को झेलता ही नही।

ठिठुर रहा है मगर हाथ सेंकता ही नही-
बदलते मौसमो का अन्दाज देखता ही नही।

जो मुझको देख के खुद आप झेंपता ही नही-
यकीन मानिये मैं आईना देखता ही नही।

जमाने भर मे ये किस्सा यूं फैलता ही नही-
जुनूने-इश्क से गर हुस्न खेलता ही नही।

हमारे दौर मे 'अनजान' को पता ही नही-
भुगत रहा है सजा, की कोई खता ही नही।

कौन जूझेगा अंधेरों से बताओ, मेरे बाद–
रास्ता सीधा भी शायद भूल जाओ, मेरे बाद।

मूरतें मुझसे भी ऊंची तुम बनाओ, मेरे बाद–
हां, मगर मुझ–सा न पाओ, मेरे बाद।

उम्र भर कांटे बिछाते राह में आये मेरी–
फूल फिर क्यों कब्र पे आकर चढाओ, मेरे बाद।

हर तरफ शैता मिलेंगे, या मिलेंगे देवता–
आदमी शायद कहीं न ढूंढ पाओ, मेरे बाद।

लौ दीये की कम जो कर पढता रहा मैं रात भर–
सुबहे–रोशन में सबक वो ही पढाओ, मेरे बाद।

जीते–जी होने न दूंगा मैं खिजाओं का गुजर–
झाड झखड जितने जी चाहे उगाओ, मेरे बाद।

मिट नहीं सकते निशां अनजाम की तामीर के–
बिजलियों पर बिजलियां चाहे गिराओ, मेरे बाद।

हर कोई ढूढा करे है, धूप मे साया कोई-
हमने दामन तेरा समझा, चाहे लहराया कोई।

थे बरहना-पा, बदन-सर भी बरहना थे मगर-
जेब देता ही नही जाहिर मे सरमाया कोई।

दरअसल ताउम्र मुतलाशी रहे दिलदार के-
हम जिसे दिल अपना देते ऐसा न भाया कोई।

आईना भी पानी-पानी हो गया है देखिये-
यू सरो-कद देखकर अपना ही शरमाया कोई।

तेरे आगे और पीछे आकिलो के काफिले-
मजिले-मकसूद की क्यो न खबर लाया कोई ?

आजकल 'अनजान' के होटो पे अक्सर गीत है-
क्या उसे इस दौर मे अपना नजर आया कोई ?

ꕥ

सासे लगी दम घोटने, तुम अब भी मौन हो—
गूंगे लगे हैं बोलने, तुम अब भी मौन हो।

पानी तो सर से ऊचा कभी का गुजर गया—
नैया लगी है डोलने, तुम अब भी मौन हो।

अब तो तुम्हारे शहर मे मिलते हैं अजनबी—
अपने लगे विष घोलने, तुम अब भी मौन हो।

जर्जर हुई दीवारो पर छत कैसे ठहरेगी-
चूहे लगे जड खोदने, तुम अब भी मौन हो।

'अनजान अपने-आप से ही बात कीजिये-
सब तो लगे मुह खोलने, तुम अब भी मौन हो।

❀

बहुत हो चुकी हैं सियासत की बातें-
चलो आओ करलें मुहब्बत की बातें।

सियासत के गुर तो बहुत जानते हो-
नहीं जानते बस मुहब्बत की बातें।

सियासत ने दुनिया को दोजख बनाया-
बना देगी जन्नत मुहब्बत की बातें।

नसीहत मे मसरूफ रहता है हर दम-
ऐ नासेह ! कभी कर मुहब्बत की बातें।

महल मिट गये, मिट गये महल वाले-
हैं बाकी अभी तक मुहब्बत की बातें।

धुआ ही धुआ है ताहद्दे-नजर अब-
यू नफरत मे डूबी मुहब्बत की बातें।

बसेरा वहा जा के 'अनजान करलो-
जहा सुन सको तुम मुहब्बत की बातें।

❀

[19]

सहमे-सहमे दरो-दीवार नजर ग्राते हैं-
ये तो तूफान के ग्रासार नजर ग्राते हैं।

कल सरे-ग्राम जो नीलाम चढे थे यारो-
तो ग्राज जो लोग खरीदार नजर ग्राते हैं।

कल यही मसनदे-इन्साफ पे बैठे होंगे-
ग्राज जो लोग गुनाहगार नजर ग्राते हैं।

देखने ग्राये हैं सय्याद के हाथों का हुनर-
हम कफस मे जो गिरफ्तार नजर ग्राते हैं।

याद रहते ही नही पाव के छाले हमको-
राह मे जब भी हमे खार नजर ग्राते है।

जाने क्या दे गई पैगाम इन्हे बादे-सबा-
फूल गुलशन के शररबार नजर ग्राते है।

मर्ज पहचान के अनजान दवा कौन करे-
ग्रब मसीहा भी तो बीमार नजर ग्राते हैं।

❀

कभी तो काश ऐसा हो कि आह निकले असर बनकर-
सरापा सामने हो यार, महबूबे-नजर बनकर।

बोहत पेंचिदगिया देखी हैं हमने तो बशर बनकर-
कभी परवाज मे अव्वल, कभी बे-बालो-पर बनकर।

हमे अब दफन कर दो, हो गया तैयार घर बनकर-
रहेंगे हम तुम्हारे दिल मे यादो का शजर बनकर।

वो आँसू पा गये इज्जत जमाने मे गोहर बनकर-
किसी मासूम की आँखो से जो निकले थे डर बनकर।

खुदाया! देख ले इक रोज तो तू भी बशर बनकर-
समझ लेगा उठाये सदमे जो हमने बशर बनकर।

दहाडे जा रहा है जग मे, जो शेरे-नर बनकर-
गिरेगा आज दुश्मन पर, यकीनन वो कहर बनकर।

कभी देखो खुद अपने-आपको मेरी नजर बनकर-
कि मैं अनजान आऊगा नजर महबूबतर बनकर।

❀

किसके घर जाके दर पे दें दस्तक–
ख्वाबे-गफलत मे शहर सोया है।

दाग सीने के धुल नही पाये–
आँसुओ तक से इनको धोया है।

सिर्फ तूफान ही की बात नही–
नाखुदा ने हमे डुबोया है।

बज्मे-ऐशो-तरब मे क्या जायें–
दिल मे तो गम ही गम समोया है।

बाज आता नही मुहब्बत से–
हमने सौ बार दिल को रोया है।

कोई अनजान की तलाश करो–
जाने कमबख्त कब से खोया है।



पहलू मे मेरे दिल है, दिल मे है चाह तेरी-
जिस सिम्त चाहे जाऊ, मिलती है राह तेरी ।

मैंने बना लिया है, महबूब तुझको अपना-
दिल मे उतर गई है, दिलवर निगाह तेरी ।

सब जानते थे हार रहा हू मुकाबिला-
लेकिन जिता गई है मुझे वाहवाह तेरी ।

खानाबदोश होकर मैं जीना चाहता था-
रास आ गई है मुझको लेकिन पनाह तेरी ।

ये चाँद तारे-सूरज और रोशनी दीये की-
गुल कर न दे कही पर ऐ यार! आह तेरी ।

मैंने तो इस जमी को जन्नत बनाना चाहा-
या रब! क्यो हो रही है दुनिया तबाह तेरी ।

सर सजदे से न उठता अनजान जिन्दगी भर-
मिल जाती काश उसको बस बारगाह तेरी ।

कुछ रिश्ते पुराने टूटते हैं, कुछ रिश्ते नये बन जाते हैं-
कुछ घाव पुराने भरते हैं, कुछ घाव नये लग जाते हैं।

कुछ जानी-पहचानी राहें, अनजानी लगने लगती है-
कुछ अनजानी राहों पे कदम, अनजाने में उठ जाते हैं।

मन की महफिल आबाद रही, ना भीड़ घटी परवानों की-
कुछ दीप पुराने बुझते है, कुछ दीप नये जल जाते है।

किसको फुरसत कि याद करे, उन भूली-बिसरी यादों को-
कुछ फूल खिजा मे झड़ते है, कुछ फूल नये खिल जाते हैं।

क्या दैरो-हरम की बात करें, मसरूफ रहे मयनोशी में-
कुछ जाम तही हो जाते हैं, कुछ जाम नये भर जाते है।

सच पूछिये तो अहसास नही होता हमको तनहाई का-
कुछ मीत पुराने छूटते है, कुछ मीत नये मिल जाते हैं।

'अनजान' हम अपने जीवन से, मायूस भला कैसे होते-
कुछ सपने टूट गये तो क्या, कुछ सपने नये दिख जाते है।

क्यो लोग अपने-आपसे कतराने लगे हैं-
आईना देख-देख के घबराने लगे हैं।

बेबाकिया मशहूर सरे-बज्म थी जिनकी-
वो आज अकेले मे भी शरमाने लगे हैं।

वादो पे भरोसा ही नही उनके रहा जब-
दे-दे के दिलासे हमे बहलाने लगे हैं।

तजदीद के कल तक जो परस्तार थे यारो-
अफसाने वोही माजी के दोहराने लगे हैं।

चलने की धुन मे मजिले ठुकराते रहे जो-
साया जहा भी देखा कि सुस्ताने लगे हैं।

जितने भी हुए दूर रहे पास ही दिल के-
खत उनके दिगर शहरो से गो आने लगे हैं।

ये बस्ती है आबाद तेरे दम से ही हमदम-
बाजार भी वरना हमे वीराने लगे हैं।

अनजान मिले आपसे कुछ और ही ढब से-
जब आप लगे रोने तो हम गाने लगे है।

❀

रात गये तक जाग चुके हैं, अललसुबह कुछ आँख लगी है–
जलती रही है साथ ही शम्मा, आँख लगी तो बुझने लगी है।

दूर तलक हैं धूप के साये, बर्गो–समर का नाम नही है–
रेत ही रेत है हद्दे–नजर तक, जोर से कितनी प्यास लगी है।

लौट रहे हैं नीड के पछी, ढूढ ही लेंगे अपना ठिकाना–
जिनका कोई घर–द्वार नही है, सूने फलक पर आँख लगी है।

भूलना चाहे भूल न पायें, छोडना चाहें छोड न पायें–
जितना ही उनसे दूर हुए है, उनकी मुहब्बत और बढी है।

एक तेरे दीदार की धुन है, परवाह नही जो राह कठिन है–
तेज कदम अनजान डगर पर, जिस्म की ताकत चुकने लगी है।



साजिशो के शिकार हैं हम लोग–
जिन्दगी से फरार हैं हम लोग।

आसमा बिजलियाँ गिरायेगा–
जब तलक खाकसार हैं हम लोग।

हम मे ठडक तलाशने वालो–
आग के आबशार हैं हम लोग।

बदापरवर ! यू देखिये न हमे–
गोया कि इश्तिहार हैं हम लोग।

दर्द की दास्ता सुनो हम से–
दद के राजदार है हम लोग।

आँख वाले ये देख सकते है–
जुल्म की पैदावार हैं हम लोग।

सर क्यो कदमो मे आपके रख दें–
आखिरश बावकार हैं हम लोग।

आपके पावो मे चुभेंगे ही–
खित्ता-ए-खारजार हैं हम लोग।

हम कयामत के साथ उठेंगे–
यू अभी तो मजार हैं हम लोग।

जो भी आयेगा जद मे डूबेगा–
तेज तूफानी धार है हम लोग।

हमसे टकरा के सर को फोडोगे-
आहनी-सी दीवार हैं हम लोग।

शीशमहलो मे दुबके बैठे रहो-
सग लिये बेकरार है हम लोग।

जेब मे अब कही न रख लेना-
कि सुलगते शरार हैं हम लोग।

जो थे 'अनजान' अब समझते हैं-
साजिशो के शिकार हैं हम लोग।

※

सर जिसका किसी पल भी हमने न उठा देखा-
उस शख्स के कदमों में हर सर को झुका देखा ।

साकी-ओ-शराबी का कुछ भेद नहीं मिलता-
हर एक की आँखों में हमने तो नशा देखा ।

काशी थी कि काबा था, क्या इससे हमें मतलब-
जब झाँक लिया दिल में हमने तो खुदा देखा ।

इक बार जो डूबे तो ताउम्र नहीं निकले-
उन झील-सी आँखों में मत पूछिये क्या देखा ।

दरबारे-मुहब्बत के आदाब निराले हैं-
शाहों को गदाओं की चौखट पे खड़ा देखा ।

अनजान जो लासानी परवाज में था अपनी-
उस शख्स को पस्ती में गुमनाम पड़ा देखा ।



जो अंधेरों की बात करते हैं-
वो क्या जानें कि रोशनी क्या है ?

दोस्ती से जिन्हे नही फुरसत-
वो क्या जानें कि दुश्मनी क्या है ?

जो सुलगते हैं धूप मे दिन भर-
उनसे पूछो कि चाँदनी क्या है ?

सारी दुनिया ही जिनकी अपनी है-
वो क्या जानें कि अजनबी क्या है ?

जो दरिन्दो की तरह जीते रहे-
वो क्या जानें कि आदमी क्या है ?

जो मुहब्बत से आश्ना न हुए-
वो क्या जानें कि जिन्दगी क्या है ?

हमने 'अनजान' करके देखी है-
हमसे पूछो कि दोस्ती क्या है ?

❀

क्यो बेवजह शोर मचाये हुए हैं लोग-
क्यो आसमान सर पे उठाये हुए हैं लोग ?

जमते नही हैं पाव कही भी किसी तरह-
बुनियाद से यू अपनी हटाये हुए हैं लोग ।

जल्लाद और मसीहा में जब फर्क कुछ नही-
क्यो नब्ज फिर किसी को थमाये हुए हैं लोग ?

बस इक हवा के झोंके की दरकार है इन्हे-
यू आग अपने दिल मे दबाये हुए हैं लोग ।

कोई बतादे किसको निशाना बनायें बस-
हाथो मे अपने सग उठाये हुए हैं लोग ।

ऐ आसमान ! तेरे सितारो की खैर हो-
तारीकियो के सख्त सताये हुए हैं लोग ।

'अनजाम हस्तो-बूद की जजीरें तोडकर-
जोशे-जुनू मे पाव बढाये हुए है लोग ।

जो मुहब्बत से आश्ना होगा-
दोस्तों ! वो न फिर फना होगा ।

मिस्ल शम्मा के जो जला होगा-
तीरगी से वो ही लडा होगा ।

कर भला तेरा भी भला होगा-
किसलिये तेरा फिर बुरा होगा ?

हुस्न जब आपका ढला होगा-
कितना हैरान आईना होगा ।

दरम्या पर्दा-ए-हया होगा-
शौके-दीदार फिर सिवा होगा ।

इश्क उस वक्त कीमिया होगा-
दर्दे-दिल जब भी लादवा होगा ।

रिन्द है, पारसा लगा होगा-
कोई *अलजाल से मिला होगा ।

❀

कहा ले जाता है हमको दिले-नादान देखेंगे-
कनारे तो नही देखे मगर तूफान देखेंगे।

अदा-ए-बेनियाजी मे नही उनका कोई सानी-
वो लेंगे किस अदा से अब हमारी जान देखेंगे।

बावक्ते-कत्ल जो कातिल की आँखो मे चमकती है-
मुकद्दर साथ दे अपना तो वो मुस्कान देखेंगे।

किसी की सहरा मे जाकर किसी की दार पर जाकर-
मुहब्बत किस तरह से चढती है परवान देखेंगे।

तलाशे-यार मे दर-दर भटकते हैं जमाने मे-
कहाँ जाकर के रुकते है कदम अनजान देखेंगे।

❀

भीड मे कोई आश्ना न मिला–
और दरीचा कोई भी वा न मिला।

वो अभी तक भरम मे जीते है–
लगता है उनको आईना न मिला।

रोज दानिशवरो से मिलते हैं–
राहते-दिल को सरफिरा न मिला।

सर ये दैरो-हरम में क्यो झुकता–
इन जगहो पर हमे खुदा न मिला।

खाक उडती है शाहराहो पर–
गामजन कोई काफिला न मिला।

हैफ! अनजान जा-ए-मर्ग है ये–
यार का सर को नक्शे-पा न मिला।



सूरज को लिए पहलू मे जीता हू कमर-सा–
गो शहर तो अपना है मगर लगता है डर-सा ।

नाआश्ना क्यो लगने लगे आश्ना चेहरे–
हर शख्स के सीने मे है क्यो खौफो-खतर-सा ?

महफिल मे भी तनहाई-सी महसूस है होती–
सैलाबे-तकल्लुम क्यों गया आज ठहर-सा ।

कल तक तो मेरे होटो पे थी शीरीं-बयानी–
हर लफ्ज मे मौजूद है क्यो आज जहर-सा ?

आदाबे-मुहब्बत का मिले दर्स जहा से–
हर बस्ती मे अब चाहिये इक ऐसा मदरसा ।

*अनजान थे आगाज का अन्जाम तो देखो–
घर वाला नजर आने लगा आज तो बेघर-सा ।

ॐ

न राहत रूह को, आराम ही न दिल को हासिल है–
न मरना ही तसल्लीवख्श है, जीना भी मुश्किल है।

थका डाली जुवा दे-दे, सदायें देने वाले ने–
मगर लगता है मेरे शहर का, हर शहरी गाफिल है।

जमाने से गिला-शिकवा-शिकायत क्या मुनासिब है–
सताने वालो की फहरिश्त मे, जब अपना शामिल है।

नमूदे-सुबह के धोके मे, शम-ए-शव बुझा डाली–
मगर हर सू अधेरा है, उजाला कोसो मजिल है।

निशाना दिल तो पहली ही नजर मे वन गया तेरा–
इरादा और क्या तेरा, बता ऐ चश्मे-कातिल है ?

कसम खाते हुए देखा-सुना, हर एक को लेकिन–
जमीर इन्सान का कहने लगा कि कौले-बातिल है।

लिये जाओगे आखिर इन्तेहा 'अनजान' का कबतक-
घडी भर का ये मेहमा है, यकीनन जाने-बिस्मिल है।

❀

कौन किसको यूं ही सताता है–
हां, जिसे अपना वो बनाता है।

थपकियां दे-दे के वो सुलाता है–
और झकझोर कर उठाता है।

प्यार से जब कोई बुलाता है–
उम्र भर के लिए रुलाता है।

उसको इन्सान तो नहीं कहते–
दिले-मजलूम जो दुखाता है।

जब जमीर आदमी का मर जाये–
हर कहीं सर को फिर झुकाता है।

शबे-तारीक होगी ही रोशन–
शम-ए-दिल यूं कोई जलाता है।

चलिये अनजान साथ दे उसका–
पांव पहला कोई बढ़ाता है।

❀

बेखबर हू कि बाखबर यारों–
आपकी तरह हू बशर यारो।

कल तलक मैं था मातवर यारो–
आज करते हो दरगुजर यारो।

राहजनो ने तो अपना काम किया–
कर रहे थे क्या राहबर यारो।

पाया-ए-अर्श हिलने लगता है–
हो दुआओ मे गर असर यारो।

पाव जलते है, सर पे साया नही–
ये जमी तो है वेशजर यारो।

खौफ इस दिल मे गर खुदा का है–
फिर तो हर राह है बेखतर यारो।

और अनजान क्या सुनायेगा–
किस्सा-ए-गम है मुख्तसर यारो।

ॐ

आती तो होगी याद उन्हें भी अतीत की–
अपनाइयत के दिन थे वो रातें प्रीत की।

अफसोस किस मकाम पे ले आई जिन्दगी–
जिज्ञासा तक रही न जहा हार-जीत की।

तुम देखते कि एक तुम्हारे अभाव मे–
वीरान महफिने है सगीत और गीत की।

तन से थके हैं, मन से भी हारे हुए-से हैं–
उम्मीद छोड पाये न हम फिर भी जीत की।

लाता है यू तो डाकिया चैक और एम ओ –
बरसो से चिट्ठी लाया नही मन के मीत की।

उस गुमशुदा को हमने तलाशा कहा–कहा–
'अनजान' हमने उम्र इसी मे व्यतीत की।



सिर्फ इक बार यूं किसी से मिले-
उम्र भर हम न फिर किसी से मिले।

कोई चाहे कभी किसी से मिले-
याद तो आये कि किसी से मिले।

आज हम ऐसे आदमी से मिले-
जिन्दगी जैसे जिन्दगी से मिले।

न मिले आपसे, मिले तो सही-
जख्मे-दिल चाहिये किसी से मिले।

मुद्दतों बाद वो मिले तो सही-
अजनबी जैसे अजनबी से मिले।

तेरी-मेरी न इसकी-उसकी है-
आग तो आग है किसी से मिले।

चलिये अनजान दोस्तों से मिलें-
मुद्दतें हो गईं किसी से मिले।

꩜

तनहा मंजिल पे पहुचने से भी क्या हासिल है-
चलिये तूफा मे अगर सामने ही साहिल है।

कैसे इन्कार करू कवच और कुण्डल के लिये-
भेस बदले ही सही, इन्द्र अभी साइल है।

रंगो-बू-वास मे बेमिस्ल उन्हे पाओगे-
जिन गुलाबो मे लहू दिल का मेरा शामिल है।

कोई आहट न कोई नक्शे-कदम है यारो-
ऐसा लगता है इसी सिम्त मेरी मंजिल है।

हमने पहले ही कहा था कि उजड जायेगी-
एक हम ही न रहे, सब हैं, तेरी महफिल है।

खन्दा-पैशानी गये सर को कटाने हम तो-
सर निदामत से झुकाये हुए कातिल है।

जो कि आगाज के अन्जाम से 'अनजान' रहे-
अहले-दानिश की निगाहो मे वो ही गाफिल है।

❀

नाम लेकर किसी का मर जायें–
तोहमतें सो हमारे सर आयें। ,

काम ऐसा कोई तो कर जायें– -
याद तो आयें, चाहे मर जायें।

वो इधर से अगर गुजर जाये– ,
खुशबूए रास्तो मे भर जायें।

धूप मे हो गुमां घटाओ का–
जुल्फें उस शोख की बिखर जायें।

कसे कहदें नजर से दूर हुए–
वो ही जब हर तरफ नजर आयें।

उनकी चौखट से हम न उठेंगे–
जिनको जाना है अपने घर जायें।

आज वो बेहिजाब आये हैं–
काश अनजान आज मर जायें।

❀

बाजगश्त उसकी साथ-साथ रही-
बहरे होते तो कोई बात भी थी।

जख्म कैसे ? खरोंच लगते हैं-
गहरे होते तो कोई बात भी थी।

पलकें कालीन-सी बिछी ही रहीं-
गुजरे होते तो कोई बात भी थी।

सिर्फ दालान ही मिले हमको-
कमरे होते तो कोई बात भी थी।

आये उजलत में और चल भी दिये-
ठहरे होते तो कोई बात भी थी।

उनसे बेरोक-टोक मिल आये-
पहरे होते तो कोई बात भी थी।

परचम अनजान अपनी अजमत के-
फहरे होते तो कोई बात भी थी।

देर तक आज जिक्रे-यार चले-
तीर इस दिल के आर-पार चले।

चार दिन उम्र के गुजार चले-
शोर बरपा हुआ 'निसार' चले।

उसका क्या दिल पे इख्तियार चले-
जिस पे शमशीरे-आबदार चले।

पास जो कुछ था वक्फ कर डाला-
है सफर लम्बा, जिससे बार चले।

जो उठे तेरी बज्म से सीधे-
मिस्ले-मन्सूर सू-ए-दार चले।

तेरा रहमत को कब गवारा है-
सर झुकाये गुनाहगार चले।

उम्रे-रफ्ता की याद आती है-
सिर्फ धुन थी कि रोजगार चले।

मेरे मरने पे जश्न मत रोको-
दुनिया, दुनिया है, कारोबार चले।

अलविदा अहले-गुलसिता ! हम तो-
सू-ए-सहरा-ओ-खारजार चले।

दावरे-हश्र ने पुकारा जब-
हम ही 'अनजान' खुशगवार चले।

ॐ

उनको अपना बना के देख लिया–
सबको दुश्मन बना के देख लिया।

मुसकुरा उठे कायनात अगर–
वक्त ने मुसकुरा के देख लिया।

उठ गये गायबाना सारे हिजाब–
सागरे-मय उठा के देख लिया।

सू-ए-मंजिल कदम बढे ही नहीं–
बारहा तो बढा के देख लिया।

तीरगी थी कि कम हुई ही नहीं–
शम-ए-दिल जला के देख लिया।

एतबार उनको हम दिला न सके–
खुद की हस्ती मिटा के देख लिया।

जिसको अनजाम इश्क कहते हैं–
हमने भी कर-कराके देख लिया।

❀

बहुत बेताब ये दिल हो गया है, अब तो आ जाओ-
गमों का दौर नाजिल हो गया है, अब तो आ जाओ।

शकिस्ता कश्ती है, मौजे तलातुम जानलेवा है-
नजर से दूर साहिल हो गया है, अब तो आ जाओ।

वो लम्हा आप जिस लम्हे मे, दिल को रास आये थे-
वो लम्हा आज कातिल हो गया है, अब तो आ जाओ।

लिखी जाती थी जो अश्कों से, रूदादे मुहब्बत मे-
जिगर का खून शामिल हो गया है, अब तो आ जाओ।

बिना आये तुम्हारे जान न निकलेगी इस तन से-
हमारा मरना मुश्किल हो गया है, अब तो आ जाओ।

कहो क्यो नींद से परहेज रख एक बस हम ही-
शहर सारा तो गाफिल हो गया है, अब तो आ जाओ।

वो जो 'अनजान' हर महफिल का था रूहे-रवा यारो-
वो ही महरूमे-महफिल हो गया है, अब तो आ जाओ।

❀

दर खुला रखियेगा आज तो मयखाने का–
रिन्द रखते हैं इरादा इधर आने का।

आप जिस दिन से जुदा हमसे हुए–
हमने मुह तक भी नही देखा है पैमाने का।

था इरादा तो कई रोज से मर जाने का–
आज लगता है सही वक्त है मर जाने का।

जाम मे डूबे हुए होशो-खिर्द हैं वाइज–
है कोई वक्त ये आपके समझाने का।

सिर्फ तारीफ किये जाओ मुसलसिल उसकी–
है तरीका यही उस शोख को बहलाने का।

कहकहा मिसरा-ए-अव्वल मे था, दोयम मे बुका–
दे दिया उसने मजा आज तो दोगाने का।

चलिये अनजान चलें, साथ कोई है तो चले–
हो गया वक्त यकी मानिये अब जाने का।



आप जिनके भी तरफदार हुए-
वो बलाओ मे गिरफ्तार हुए ।
बेगुनाही का ये नतीजा है-
कि गुनाहगारो मे शुमार हुए ।
तुझसे मानूस ऐ बहार हुए-
तो गरेबान तार-तार हुए ।
दूर दैरो-हरम से जा बैठे-
मयकदे से यू हमकनार हुए ।
जो जुदाई मे यार की निकले-
अश्क वो मोती आबदार हुए ।
नामो-नामूस मिट गया उनका-
होने को कितने ताजदार हुए ।
सुर्खरू और सरबुलन्द रहे-
इम्तेहा यू तो बार-बार हुए ।
खिदमते-कौम दिल से करते रहे-
लोग ऐसे गले के हार हुए ।
सौ हिजाबो मे शर्म थी जिनको-
आजकल गर्मी-ए-बाजार हुए ।
अज्मे-तामीरे-आशिया न मिटा-
हमले सौ बर्क-शोलाबार हुए ।
काश 'अजआज' खाक ही होते-
खाकसार कितने बावकार हुए ।

❀

जैसे पिंजरे मे परिन्दा कोई पर मारे है-
संगदिल दर पे तेरे यू कोई सर मारे है।

दिल तो पहली ही नजर मे तुझे दे बैठे-
जान लेने को तू अब तीरे नजर मारे है।

लाख तूफान उठे, चाहे मुखालिफ हो हवा-
उसको साहिल ही मिलेगा वो अगर धारे है।

तल्खी-ए-जीस्त हुई तल्खी-ए-जाम मे गुम-
सुनते आये है जहर ही तो जहर मारे है।

वो मुसाफिर न पहुँच पायेगा मंजिल पे कभी-
बीच रस्ते मे ही जो हौसला गर हारे है।

ऐसे बीमार का 'अनजान' खुदा हाफिज है-
क्या बचे जिसको मसीहा ही अगर मारे है।



उठे कदम जो तेरी सिम्त तो रुके जाकर-
जहा पे दार थी, कैदो-कफस या वीराने ।

वो लौटकर न इधर आये दोस्तो अब तक-
गये थे जो कि उधर घर किसी को बतलाने ।

जमाना करने को सूदो-जिया की बात करे-
किसी की बातो मे आते नही है दीवाने ।

खुदारा ! डाल दो जुल्फे दराज का साया-
सुनगते सहरा मे सूरज लगा है झुलसाने ।

हरम उदास है, वीरा हैं बुतकदे लेकिन-
कभी उदास न वीरा हुए है मयखाने ।

क्यो राहजनो से गिला अब कोई करे यारो-
कि राहबर ही लगे आजकल तो भटकाने ।

क्यो काप उठा है कातिल के हाथ का खजर-
बडे सबात से हम आये सर को कटवाने ।

बिना हमारे ही महफिल सजाने वालो सुनो-
न वैसी शम्मा ही होगी, न हम-से परवाने ।

मधुसूदन ! ये कोई जग का उसूल नहीं-
मैं खाली हाथ हू अर्जुन है तीर को ताने ।

करन करन है, कवच और न सही कुण्डल-
पितामह भीष्म जिसे अर्द्धरथी ही थे माने ।

बला का जोश लिये आ रहा है शेरे-नर-
महान योद्धाओ, महारथियों को धूल चटवाने।

गिरा करन तो कोहराम मच गया हर सू-
मगर माँ कुन्ती का गम और कोई क्या जाने।

करन को अंजुलि भर पानी पांडवो दो तुम भी-
तुम्हारा अपना है जिसको थे गैर तुम माने।

वो दर्द पाया है 'अनजान' एक दिलबर से-
किसी भी दर पे गये फिर न हाथ फैलाने।

❀

चीख तो चीख है, सदा तो नही–
माना बहरे नही, सुना तो नही।

जो तेरे दर पे सर को फोडे है–
देख ले, तेरा आश्ना तो नही।

जब हिकायते–दर्द उसने सुनी–
उसके चेहरे का रग, उडा तो नही।

मिस्ले मन्सूर, दार पर मेरे–
बाद मे दूसरा, चढा तो नही।

ज्यो का त्यो लौट आया खत मेरा–
शुक्र है उसने, ये पढा तो नही।

सहमा कोने मे, कौन बैठा है–
देख लो, वो कही खुदा तो नही।

बूंदा–बादी है आज सहरा मे–
आवलो से धुआ उठा तो नही।

न सही रूनुमा निगाहो मे–
नक्श जो दिल मे है मिटा तो नही।

जाने क्यो मेरा नाम लेते नही–
इतना 'अनजान मैं बुरा तो नही।



आखिरश उसका दर खुला तो सही-
गुन्चा उम्मीद का खिला तो सही।

हमसफर क्यो न मैं कहू उसको-
दो कदम ही सही चला तो सही।

कौनसी मै है जो नही मिलती-
तू कभी दिल से दिल मिला तो सही।

नगे पावा ही दौड आयेंगे-
तू हमे प्यार से बुला तो सही।

इन अधेरो की उम्र थोडी है-
दीप दिल का कोई जला तो सही।

शायद उनको यकीन आ जाये-
हाले-दिल उनको तू सुना तो सही।

देख लेना कि चाक फिर होगा-
ये गरेवान तू सिला तो सही।

साथ मे चलने वाले भी होंगे-
पाव पहले तू ही बढा तो सही।

गैर मुमकिन है न मिले मजिल-
सू-ए-मजिल कदम बढा तो सही।

खेमाजन होगे हक-परस्त हुसैन-
लोग कहते हैं करबला तो सही।

सामने दोस्त है कि दुश्मन है–
उमर-बिन-साद है खड़ा तो सही।

फिर नई आग ले तुलू होगा–
आफताब आज का ढला तो सही।

वो लगा लेंगे अपने सीने से–
उनके कदमों में सर झुका तो सही।

उम्र अनजान कट ही जायेगी–
तू किसी से ये दिल लगा तो सही।



तालिबे-दीद गर हो तो इतना करो-
अपनी आँखो से पर्दा हटा दीजिये।

कारवा जिन्दगी का न भटके कही-
दीप राहो मे दिल का जला दीजिये।

जिससे कोई गुनाह आज तक न हुआ-
बेगुनाही की उसको सजा दीजिये।

जान निकलेगी हर्गिज न उसके बिना-
आखिरी वक्त उसको बुला दीजिये।

याद आये हमारी, रहे जब न हम-
आज महफिल को इतना सजा दीजिये।

पहले लैला के तेवर तो पैदा करो-
हमको फिर चाहे मजनू बना दीजिये।

जब मुहब्बत की दौलत है हासिल हमे-
घर मे जो कुछ है उन पे लुटा दीजिये।

गर बुलन्दी का अरमान सीने मे है-
पस्त लोगो को हिम्मत बधा दीजिये।

खेतिया लहलहायेगी फिर प्यार की-
तुरमे नफरत को दिल से मिटा दीजिये।

खाक बन कर लिपट जायेंगे पावो से-
खाक मे चाहे हमको मिला दीजिये।

यार के पहलू मे आकर सुकू पा गये–
गर्दिशे-वक्त को ये बता दीजिये।

आच जिनकी तुम्हे भी जलाने लगे–
शोलो को इस कद्र न हवा दीजिये।

जब दवा कारगर कोई हो न सके–
रोक दो सब दवायें, दुआ दीजिये।

ख्वाब कितने ही महरूमे-ताबीर है–
एक-दो की तो ताबीर ला दीजिये।

दूध और खून का रिश्ता नकली नही–
शरपसन्दो को इतना बता दीजिये।

कर चुका हू जो अहदे-वफा दोस्तों–
मैं निभाऊगा तुम भी निभा दीजिये।

वो ये समझे कि उनको लिखा ही नही–
उनके हाथो मे खत ये खुला दीजिये।

देख लेना कि पछताओगे इक दिन तुम्ही–
फिर भी चाहो अगर तो दगा दीजिये।

आज 'अनजान' हसते हुए ही सही–
जो भी सगदिल है उसको रुला दीजिये।

आज उनको सलाम कर आये-
जिन्दगी को तमाम कर आये।

चन्द खुशियां जो पास थी अपने-
आज वो उनके नाम कर आये।

सुबह होते ही हम गये थे वहां-
बातों-बातों में शाम कर आये।

जाने क्या देखा उनकी आंखों में-
जो गये दिल को थाम कर आये।

खुश्क जाहिद दिखाई देते थे-
पेश उनको भी जाम कर आये।

उनके कदमों में गिर पड़े थे मगर-
जब उठे हाथ थाम कर आये।

अब न 'अनजान' रूठ पायेंगे-
रूठना तो हराम कर आये।

❀

उस यार ने वफाओ का ये सिला दिया—
खुद न मिला तो खाक मे हमको मिला दिया।

मजमून कोई मरुफी नही है हयात का—
खत भी दिया तो यार को अक्सर खुला दिया।

ये जज्बा-ए-उम्मीद कहा जागने लगा—
दे-दे के थपकिया जिसे हमने सुला दिया।

चलती हैं तेज आधियां, झडती है पत्तियां—
दौरे-खजा मे फूल ये किसने खिला दिया।

ये जख्म भर न पाये थे, नाखून बढ गये—
मरहम मे गोया नमक किसी ने मिला दिया।

बेचैन खुद खुदा है, जरा थामिये उसे—
दीवानगी मे अर्शे-मुअल्ला हिला दिया।

अनजान' हमको मौत का अब खौफ कुछ नही—
हम मर रहे थे आपने आकर जिला दिया।

❀

महमूद की नजर से देखो अयाज को-
बदनाम इश्क हुस्न को रुसवा करे तो क्या ?

क्यो नाजनीने-मिस्र कटीं बैठी उगलिया-
कोई फकत जुलेखा का चर्चा करे तो क्या ?

जब तावे-दीद ही न रही अहले-बज्म में-
हो हुस्न बेहिजाब कि पर्दा करे तो क्या ?

गश खा गये, हवास भी गुम थे कलीम के-
ऐसे मे आशकारा वो जलवा करे तो क्या ?

जिसको शदीद दर्द मे मिलती हो लज्जतें-
बीमार गर न चाहे मसीहा करे तो क्या ?

तपती हुई जमीन ने झुलसा दिया वजूद-
अब अब्र आसमान से बरसा करे तो क्या ?

अनजान आरजू-ए-मुलाकात जब नहीं-
पैगाम उनके आने के आया करे तो क्या ?

तुम इनको हटाओ, चाहे उनको विठाओ–
है वक्त की आवाज कि भारत को बचाओ।

सर साप उठाये हुए फुफकार रहे है–
इबलीस की औलाद की ताकत को झुकाओ।

त्वारीख के पन्नो पे सियाही न उडेलो–
गुम कारवा हो जायेगे, जुल्मत को मिटाओ।

ये आग कही फूक न दे सारे चमन को–
इस आग की बढती हुई शिद्दत को घटाओ।

हक छीनते आये है जो मजलूमो का अब तक–
उन लोगो की बढती हुई हिम्मत को दबाओ।

अब और दरिन्दो के डराये से डरो मत–
हर चेहरे पे छाई हुई दहशत को मिटाओ।

फिर चैन मे मिल-बैठ के बतियाया करेंगे–
हाँ, पहले मगर दिल मे मुहब्बत को जगाओ।

'अनजान मुहब्बत के सिवा कुछ न बचेगा–
तुम जान बचाओ, चाहे दौलत को बचाओ–

ꣿ

अब तो जनाब जीने के अन्दाज सीखिये–
कल तो न सीख पाये मगर आज सीखिये।

दिल को सुकून बख्शे, तसल्ली दमाग को–
मसरूर रूह जिसमे हो वो साज सीखिये।

उस रास्ते पे चलिये जो मन्जिल का दे पता–
अन्जाम जिसका अच्छा हो, आगाज सीखिये।

यू पर–कटे परिन्दो–सा जीना फिजूल है–
अफलाक जेरे–पा हो वो परवाज सीखिये।

मुर्दों मे जान डाल दे, जिन्दो मे हौसला–
जिन पर यकीन सबको हो अल्फाज सीखिये।

कोई भी जिसको कर न सके यू ही दरगुजर–
हर सिम्त जिसकी गूज हो, आवाज सीखिये।

'अनजान' इस जमाने मे हमदद कम नही–
कैसे बनाये जाते है, हमराज सीखिये।

❀

उक्ताये हुए हम तो हर बज्म से उठ आये–
तनहाई ही अच्छी है, रास आये कि न आये।

पथरीले से चेहरो पर क्या खाक नजर आये–
कोई तो नही ऐसा जो दिल मे उतर जाये।

इस शोर के दरिया मे आवाज कोई अपनी–
अव्वल तो नही होगी, हो तो क्या सुनी जाये।

सय्याद के सीने मे, दिल नाम की शै कोई–
अल्लाह ने दी होती, बुलबुल तो यही गाये।

कल शहर मे चर्चा था, जिन शोख-जमानो का–
आईना जरा देखा, तो देख के घबराये।

हैरान है बामो-दर उस यार के आने से–
दीवारो की ख्वाहिश है कदमो मे लिपट जाये।

'अनजान' भटकने से अब बाज भी आ जाओ–
लाजिम है ठहर जाना, कोई प्यार से ठहराये।

❀

बड़ी उम्मीद लेकर हम तेरी महफिल मे आये हैं-
यहा तस्कीन पायेंगे ये हसरत दिल मे लाये हैं।

अगर तू ही सहारा इनको न देगा तो क्या होगा-
तेरा ये नाम सुन कर दूर से मुश्किल मे आये हैं।

तलातुमखेज मौजो ने किया जो कुछ मुनासिब था-
हमे तो हादसे दर पेश हद्दे-साहिल मे आये हैं।

हमारा नाम ले-लेकर वो छाती पीटता क्यो है-
ये कैसे इन्कलाबात आजकल कातिल मे आये हैं।

निगाहे-मेहर कर 'अनजान पर इस वक्त तो साकी-
हजारो जख्म ये हसते हुए दिल मे छुपाये हैं?

❀

यार से श्राज सामना होगा-
दिल को हाथों से थामना होगा।

श्राह भरना जहा मना होगा-
दर्द दिल का वहा घना होगा।

पाया-ए अर्श तक हिला होगा-
जब कि श्रादम का दिल दुखा होगा।

मैं क्या जानू कि कौन है यारो-
होने को वो कोई खुदा होगा।

टूट जायेंगी सारी जजीरें-
जब रिहाई का हौसला होगा।

गम तो कुछ श्रौर ही सिवा होगा-
यार मिलकर के जब जुदा होगा।

कौन फिर श्राप पर फिदा होगा-
हुस्न जब श्रापका ढला होगा।

जो है तकदीर मे लिखा, होगा-
बुजुर्गों से यही सुना होगा।

श्राप 'अनजान' को नही समझे-
बारहा श्रापसे मिला होगा।

शहनशाही तखय्युल है, मुकद्दर है फकीराना-
कोई देखे कि किस अन्दाज से जीता है दीवाना।

लड़ाते आये है दैरो-हरम सदियो से इन्सा को-
मगर लड़तो को मिलवाता रहा है सिर्फ मयखाना।

लगा है साये-सा पीछे ये शैता जान ले आदम-
न इसकी बातो मे आना, पड़ेगा वरना पछताना।

मजारो पर नहूसत का जरा तुम हाल तो देखो-
कभी इन नाजनीनो का भी था अन्दाजे-सुलताना।

गया जो वक्त हर्गिज लौट कर आता नही लेकिन-
मै फौरन दौड़े आऊगा, कभी तुम दिल से बुलवाना।

न आहट ही हुई कोई, न थी उम्मीद आने की-
हमेशा याद आयेगा तेरा चुपके से यू आना।

हमे अनजान कितना नाज है जख्मो पे मत पूछो-
गवारा कसे करलें दोस्तो फिर इनका भर जाना।

जाने वाले को बुलाया कितना–
जाने वाले ने रुलाया कितना !

दिल के नजदीक वो आया कितना–
दूर फिर उसको ही पाया कितना !

उसको मखसूस बनाया कितना–
गैर की तरह् सताया कितना !

लौट कर मेरी सिम्त आया नहीं–
गो बुलाने को बुलाया कितना !

याद वो बार–बार आता है–
यूं भुलाने को भुलाया कितना !

वो कभी अपने पावों पर न चला–
गो चलाने को चलाया कितना !

दिल का 'अनजान' खरीदार नहीं–
गो सजाने को सजाया कितना !

❀

आप आये तीमारदारी को-
मुद्दा मिल गया बीमारी को।

आजकल दोस्तो मैं पीता नहीं-
जी रहा हूं उसी खुमारी को।

आमदे-फस्ले-गुल के चर्चे हैं-
भूल भी जाओ गिरफ्तारी को।

वक्ते-सहरी तो कोई आया नहीं-
शहर आया है इफ्तेयारी को।

आप आये हैं गमगुसारी को-
देखिये दिल के जख्मे-कारी को।

अपने बारे मे सोचते हम भी-
जानते काश दुनियादारी को।

आप 'अनजान' से मिले होते-
तो भुला देते होशियारी को।



हम है, हमारी बज्म सजी है तो आइये-
तस्कीने-रूह आप यहा आ के पाइये।

वक्ते-सहर से पहले ही घर अपने जाइये-
जो लोग सो रहे है उन्हे क्यो जगाइये।

हम तो तुम्हारे अपने हैं फिर क्यो छुपाइये-
कितना है प्यार आपके दिल मे दिखाइये।

बस एक तेरी सीधी नजर हमको चाहिये-
तिरछी नजर से हम पे न बिजली गिराइये।

फूलो की आरजू है तो फिर जख्म खाइये-
काटो से अपना दामने-दिल क्यो बचाइये।

*अनजान कोई साथ नही है तो क्या हुआ-
राहे-सफर मे पहला कदम तो उठाइये।

꙳

सभी मुजरिम हैं, मुन्सिफ कौन है, कहिये जमाने में-
न उजलत कीजियेगा, फैसला अपना सुनाने में।

यू ही बर्बाद कर डालोगे शब सजने-सजाने में-
सवरने की जरूरत कुछ नही नजदीक आने में

सिवा मेरे कोई माहिर नही है गम उठाने में-
करोगे वक्त जाया, हर किसी को आजमाने में।

अगर लज्जत तुम्हे मिलती हो बिजली ही गिराने में-
तो फिर देरी न करिये, आशियां मेरा जलाने में।

लगा क्यो वक्त इतना, आखिरश ये जान जाने में-
कराहत आ गई क्या आजकल उनके निशाने में।

कहा से आ गई रंगीनियाँ मेरे फसाने में-
मेरी तो उम्र गुजरी है, यू ही रोने-रुलाने में।

मिला अनजान क्या उनको मेरे दिल को दुखाने में-
वो ही बदनाम होकर रह गये सारे जमाने में।

❀

अब फर्क रहना चाहिये न खासो-आम मे-
बदलाव लाना चाहिये कुहना निजाम मे ।

जागी हैं कुछ उम्मीदे नई जो अवाम मे-
बर आयेंगी यकीनन, लग जाओ काम मे ।

सर जो झुके तो दिल भी झुके बारगाह मे-
अजमत ये होनी चाहिये अपने ईमाम मे ।

पलकें बिछी हुई है, मानिन्दे-फर्शे-राह-
करना मुआफ गर हो कमी इन्तजाम मे ।

तू मौसमे-बहारा, जरा आ तो लेने दे-
सय्याद ! देख लेना रहेंगे न दाम मे ।

इसरार उसका टालना अब तो मुहाल है-
इजहार ऐसा कुछ ही किया है पयाम मे ।

*अनजान पारसाई की बातें न कीजिये-
डूबे हुए है आप तो तहसीने-जाम मे ।

❀

ले लें क्या उसका नाम सरे-आम दोस्तो-
हो जायेंगे ईमान से, बदनाम दोस्तो !

लेते है सुब्हो-शाम वो ही नाम दोस्तो-
गोया नही है और कोई काम दोस्तो !

मुद्दत से जो कि जह्न मे है घर किए हुए-
क्यो मानलें ख्याल है वो खाम दोस्तो !

रावन तो हर जगह पे दिखाई दिये मगर-
ढूंढा कहा-कहा, न मिले राम दोस्तो !

मंजिल का क्या है, चाहे मिले या कि न मिले-
चलने से रखना चाहिये बस काम दोस्तो !

न उससे मैं जुदा, न जुदा मुझसे वो कभी-
होता रहा है मुझको तो इलहाम दोस्तो !

तू कौन ? मैं हू कौन ? कहा कौन-कौन हैं-
सुन मे जवाब इनके मिलेंगे तमाम दोस्तो !

दीवारो-दर को देखें कि हम बाम दोस्तो-
आया है उनके आने का पैगाम दोस्तो !

अनजान मुद्दतो की लिये प्यास आया है-
गर दे सको तो दीजियेगा जाम दोस्तो !

डर क्या दिखा रहे हो कफस और दार का–
पत्थर का दिल नही है हर इक पहरेदार का।

आ न सकेंगे आप ये कहला भी दीजिये–
कि खत्म सिलसिला तो हो इन्तजार का।

हर ज्यादती खजा की गवारा हमे मगर–
दिल मे यकीन रखते है फस्ले बहार का।

सय्याद! बे-परी पे मेरी नाज तू न कर–
उड जाऊंगा, सुनूगा जो मुज्दा बहार का।

जिसने पनाह ले ली, तेरी बारगाह मे–
कोई पता लगा न सका उस फरार का।

बाहम रहेगी दोस्ती हर एक हाल मे–
अन्जाम हो बाखैर उस कौलो-करार का।

'अनजान' पैरोकार है बस इत्तेहाद का–
मन्जर उसे दिखाइये न इन्तेशार का।

❀

कल तक जो बावफा था, हुआ आज बेवफा-
दिल ये दिखा रहा है हमें किसलिये खुदा ?

साबित कदम अगर है तो चलने से काम रख-
पावों के छाले देख न काटा कोई चुभा।

मौत और मसीहा साथ में आते नहीं कभी-
मरने का वक्त आया तो कोई नहीं जीया।

देखो तुम्हारा नाम था बावक्ते-रुख़सती-
कलमा कहो इसे या कहो आखिरी सदा।

ए यार! देख गैर भी गमगीन हो गये-
इस वक्त तू भी चेहरे पे रंजीदगी तो ला।

भर-भर के मिट्टी लाये हैं मुट्ठी में यार लोग-
हमको यही वफाओ का अपनी सिला दिया।

*अनजाना के जनाजे में शामिल है आज वो-
ऐ आसमान! देख अनोखा ये माजरा।

❀

[65]

उस यार के कूचे मे सौ बार मैं हो आया–
अश्को के तसलसुल से दामन को भिगो आया ।

जज्बात की शिद्दत ने पहुँचा ही दिया उस तक–
उन झील-सी आँखो मे ईमान डुबो आया ।

तस्कीने-दिली पाने निकला था नशेमन से–
अफसोस कि जब लौटा गम दिल मे समो आया ।

ये जान निकल जाये उस यार की गलियो मे–
ईमान तो कब का ही उन राहो मे खो आया ।

चाहत का शजर शायद फल-फूल गया होगा–
जब देखने पहुँचा तो बेसाख्ता रो आया ।

मकतूल की आँखो मे तस्वीर थी कातिल की–
गो खून के धब्बे तो वो धोने को धो आया ।

'अनजाना' मुहब्बत की राहों मे बहकने दो–
हर एक बहकता है इस राह में जो आया ।





हम न होंगे तो हमें याद किया जायेगा–
घर जो वीरान है आबाद किया जायेगा ।

बस यही सोच के हर रंज उठा लेते हैं–
जुज हमारे किसे बरबाद किया जायेगा ।

हम तो हर हाल में तामील करेंगे उसकी–
मान कर अपना जो इरशाद किया जायेगा ।

फिर कोई जुर्म किया जायेगा साबित हम पर–
जीते जी हमको न आजाद किया जायेगा ।

जिन असीरों को रिहाई की तमन्ना ही न हो–
उन असीरों का क्या सय्याद ! किया जायेगा ?

इसी उम्मीद पे 'अनजान' सितम दिल पे सहे–
जब दुखी होगा तो दिलशाद किया जायेगा ।



दैरो-हरम को छोडकर, जब मयकदे मे आ गये–
अब पारसा समझो हमे, या रिन्द का खिताब दो।

तलवार भाजते हुए, बरसो से थक गये है जो–
अब उनके हाथ मे कलम और प्यार की किताब दो।

इस हादसाते-हयात ने, रातो जगाया है हमे–
ताबीर जिसकी हो हसीन, आखो को ऐसा ख्वाब दो।

नफरत दिलों की दूर कर, सबको मिला दे जो गले–
ऐसा मुगन्नी ढूढकर, हाथो मे उसके रबाब दो।

दुनिया मे शान से जीयो, उकबा मे सुखरू रहो–
महशर मे यजदा जब करे, बेखौफ हो जवाब दो।

नगे बदन को चाहिये, कुछ ढापने को दोस्तो–
हो छाल-खाल-बाल या रेशमो-कमख्वाब दो।

'अनजान तग आ गये, कहना निजाम से तो अब–
दस्तूरे-दुनिया बदलने को, नारा-ए-इन्कलाब दो।

❀

तंग आ गया हूँ शोरे-मुसलसिल से, जाम दे-
मजबूर हो के आया हू मैं दिल से, जाम दे।

दम ही निकल न जाये सवालो-जवाब मे-
इतने सवाल पूछ न बिस्मिल से, जाम दे।

दैरो-हरम की सिम्त न जाना पडे कहीं-
साकी अगर उठा तेरी महफिल से, जाम दे।

नाआश्ना हैं लोग जो तूफाने तुन्द से-
उनको पुकारने दे तू साहिल से, जाम दे।

'अनजान झूमता हुआ दर से उठे तेरे-
होना है रू-ब-रू इसे कातिल से, जाम दे।



कदम लडखडाने लगे बेखुदी मे–
कहा आ गये हम दीवानगी मे ?

उसे लुत्फ जीने का क्या खाक आये–
नही रखा जिसने कदम आशिकी मे ।

न उलझा जो जुल्फो के पैचो-खम मे–
यकीनन भटकता रहा गुमरही मे ।

बुझा दो चरागे-दहर को बुझा दो–
सुकू दिल को मिल पायेगा तीरगी मे ।

अधेरे मे पा ही गये अपनी मजिल–
भटकने का डर था हमे रोशनी मे ।

नही एक पल भी उन्हे भूल पाये–
हो काफिर जो गफलत हुई बदगी मे ।

जब हासिल है 'अनजान' उनकी मुहब्बत–
हमे और क्या चाहिये जिन्दगी मे ?



कौन कोशिश करे दीवाने को समझाने की-
बात सुनता ही नही जो किसी फरजाने की।

हौसला किसमे है तूफान का मुह फेर सके-
सिफते-फरहाद है चट्टान से टकराने की।

गर कोई कैस हो सहरा से गुजर भी जाय-
राह दीवाना ही चल सकता है दीवाने की।

जो भी आता है यहा रिन्द-बलानोश हुआ-
सुध किसी को न रही लौट के घर जाने की।

इतनी हैरत से मुझे देख रहे क्या हो-
संगे-बुनियाद हू मैं काबा-ओ-बुतखाने की।

इसको मे'राजे-मुहब्बत के सिवा क्या कहिये-
शम्मा पे जान निकल जाये जो परवाने की।

कितने नादान हैं, कम-अक्ल हैं दुनिया वाले-
कोशिशें करते है *अनजाम* को समझाने की।

❀

सरगर्मे-बगावत है गुल-वर्गो-समर यारो–
होने को चमन मे है अब बरपा कहर यारो।

सय्याद के जुल्मो से, बेजार परिन्दे हैं–
अब जाल से निकलेंगे, पर हो कि न पर यारो।

इस रात की जुल्मत से, तग आ ही गई आँखें–
चीरेंगी अधेरे को, देखेंगी सहर यारो।

कमजोर कनारो से, सैलाब नही रुकते–
इस तौर से उट्ठी है, तूफानी लहर यारो।

गर जिन्दा रहे तो हम मिल जायेंगे अपनो से–
मैदान मे निकले हैं, हम छोड के घर यारो।

करनी ही पहल होगी, हम सोच चुके दिल मे–
इक रोज तो मरना है, किस बात का डर यारो।

'अनजान' भगतसिंह के बलिदान की सौगंद है–
इस देश पे जा देकर, हम होंगे अमर यारो।

सहरा को कैस, दार को मन्सूर मिल गये-
इस दौर में नहीं क्यों मुहब्बत नवाज लोग ?

जिसको भी देखियेगा परेशान-हाल है-
किस दर्जा बेकरार हैं अन्दर से आज लोग ?

चेहरों पे है तनाव, निगाहे उदास हैं-
जाने कहा चले गये, खुशमिजाज लोग ?

जो बारगाहे-यार में जा-दिल फिदा करे-
क्यों आज भूल बैठे हैं, तर्जे-नमाज लोग ?

रूदादे-हुस्नो-इश्क का उनवान खो गया-
महमूद भी रहे न रहे हैं अयाज लोग।

आवाज दो, मसीहा कोई है तो आयेगा-
मायूस हो चले हैं कई ला-इलाज लोग।

वो तो इसी शहर में भटकता है रात-दिन-
जो जानने को जान सके उसको बाज लोग।

जिसको हटाना हो राह से तो लागू कीजिये-
दस्तूर इसको कहते हैं कामराज लोग।

'अलजाल उनसे हकपरस्ती की आस क्यों-
रावन के राज को जो कहे रामराज लोग।

इश्क की तौहीन हम कर न सके–
शिद्दते-गम मे भी आह भर न सके।

यार से शिकवा-गिला कर न सके–
तोहमतें सर उसके हम धर न सके।

बढ गये नाखून हो तो आइये–
जख्म हैं ताजा अभी भर न सके।

यार के दर पे झुका सर न उठा–
सजदा ऐसा शेख जी कर न सके।

कर चुके नज्रे-हवादिस जिन्दगी–
बुजदिलो की मौत हम मर न सके।

रब्ते-बाहम जब अदम-मोजूद है–
खोल कर दिल बात हम कर न सके।

हसरतें 'अनजान' दिल मे रह गईं–
चाह कर इजहार हम कर न सके।

❀

चलिये बाजार मे नीलाम पे चढ जाते हैं-
फैसला छोड दें हाथो मे खरीदारो के।

ऐसा लगता है कि इन्साफ मिलेगा इनको-
चेहरे ऐसे तो नही होते गुनाहगारो के।

बुतशिकन हाथो मे तलवार लिये आये थे-
हौसले कम न हुए बुत के परस्तारो के।

क्यो मेरे मुल्क मे अब गर्मी कही दिखती नही-
सर्द उनवान नजर आते हैं अखबारो के।

आपका दौरे-हुकूमत जो यू ही चलता रहा-
भाग तो फूट ही जायेंगे समझदारो के।

दिल्ली-ओ-धर्मपल्ली गोया हैं वहशी बहनें-
बस मे आ सकती हैं हर दौर के खूंखारो के।

चलिये 'अनजान' गुलिस्ता से उठा ले डेरा-
जद मे हर फूल नजर आता है अब खारो के।

❀

मेरी तनहाइया तो मत छीनो-
भीड मे तो मैं जी सकूगा नही।

अपनी नजरो से गिर गया जिस दम-
हश्र तक फिर कभी उठूगा नही।

प्यार किस दर्जा तुमसे है मुझको-
गर कभी पूछा तो कहूगा नही।

लोग मरते हैं आजकल जैसे-
मौत ऐसी तो मैं मरूगा नही।

बेरुखी से जो पेश आओगे-
तो गले आपसे मिलूगा नही।

झुकना जल्लाद को पडे तो पडे-
सर कटे कि रहे झुकूगा नही।

जानता हू कफस क्या होता है-
अब हू आजाद तो फसूगा नही।

तुम सितम पर सितम किये जाओ-
मैं शिकायत कभी करूगा नही।

जानता हू तू सिर्फ मेरा है-
हो किसी और का सहूगा नही।

रात जब चाँदनी मे जलती है-
सर्द आहें तो मैं भरूगा नही।

"अस्सलातो-खैरुम-मेनन्-नौम" -
दे मोअज्जिन सदा सुनूं गा नहीं ?

मौजे-तूफान सर पटकती रहे-
मैं हूं चट्टान-सा हिलूं गा नहीं।

थाम रखा है तुमने बांहों में-
अब किसी हाल में गिरूं गा नहीं।

खूब वाकिफ है हाल से मेरे-
खत कभी यार को लिखूं गा नहीं।

मिल गया है सही ठिकाना जब-
दर-ब-दर अब तो मैं फिरूं गा नहीं।

मस्लहतन मैं खामोश हूं यारो-
वरना तुम जानते हो गूं गा नहीं।

किससे लेना है, किसको देना है-
इन हिसाबों में तो पडूं गा नहीं।

साख है तो सवाई इज्जत है-
साख खोकर तो मैं जियूं गा नहीं।

जिसका पीना हराम हो साकी-
जाम ऐसा कभी पियूं गा नहीं।

चाक जब तक हैं सीने फूलों के-
तो गरेबान मैं सियूं गा नहीं।

दिल दिया है तो जान भी दूंगा–
कौल से अपने मैं डिगूंगा नहीं।

राहे–उल्फत मे मुश्किलें ही सही–
जीते–जी इससे मैं हटूंगा नहीं।

उनके मेहरो–करम हो याद रहे–
जुल्म जो-जो किये गिनूंगा नहीं।

कौन नासेह से बेवजह उलझे–
ध्यान समझाने पे धरूंगा नहीं।

याद आऊंगा फूल की मानिन्द–
फास की तरह मैं चुभूंगा नहीं।

तुम कदम से कदम मिलाओ तो–
हो सफर लम्बा मैं थकूंगा नहीं।

मैं हूँ फौलाद कोई बर्फ नहीं–
तेज गर्मी से भी गलूंगा नहीं।

लोग 'अनजान' ढल गये जिनमे–
ऐसे साचो मे तो ढलूंगा नहीं।

❀

मुकद्दर बन गई शायद यही तनहाइया यारो-
हमारे हिस्से मे आई हैं बस गुमराहिया यारो।

न कोयल कूकती है, न महक आमो की आती हैं-
खजा की जद मे गोया आ गई अमराइया यारो।

झुके सर को लिये कब से उठे हाथो मे बैठा हू-
गिरे हाथो से ली जाती नही अगडाइया यारो।

भुला बैठे हैं उनकी याद और नाम तक फिर भी-
मगर क्या कीजिये कि साथ हैं परछाइया यारो।

अधेरा ही अधेरा है जहा तक भी नजर जाये-
कभी हर-सू उजाले थे, कभी रा'नाइया यारो।

यकीनन मजिले-मकसूद पे पहुचेंगे दीवाने-
कठन हो रास्ते चनने मे हो दुश्वारिया यारो।

किसे आवाज दें, हर तरफ सन्नाटा-सा छाया है-
इन्ही वीरा इलाका मे ही थी आबादिया यारो।

शहर बरबाद हो तो फिर से कर आबाद सकते हैं-
मगर जाती नही दिल मे बसी वीरानिया यारो।

हम ऐसे ही गुरु-गम्भीर पहले तो कभी न थे-
नतीजा उनकी सोहबत का है ये खामोशिया यारो।

जिन्हे हम हाशिये पे छापना बेजा समझते थे-
वो ही बनने लगे अखबार की अब सुर्खिया यारो।

राई से मुबर्रा कौन है, बेऐब दुनिया में–
ने तो बस दिखाई दी हैं उनमे खूबियां यारो।

फ़स मे हैं मगर क्या कीजिये जो याद आये तो–
मन मे इन दिनो किस हाल मे है आशियां यारो।

हर बरबाद होकर रह गये हैं आलीजाहो के–
गर कायम रही हर हाल मे ये झुग्गियां यारो।

अक्सर देखता हू चलती-फिरती जिन्दा लाशो को–
ाये फिरते है घर-दफ्तर जो अपनी अर्थियां यारो।

जज्बा-ए-मुहब्बत जान है अनजान आदम की–
कल कर खुल्द से चाहे सहे फिर सख्तियां यारो।

ł

ॐ उनका ढलता शवाब क्यो देखें-
शाम का आफताब क्यो देखें ?

जिसकी तावीर गैर मुमकिन है-
दोस्तो ! ऐसा ख्वाब क्यो देखें ?

आपका चेहरा देख लेते है-
तो भला माहताब क्यो देखें ?

उनके आरिज की ताजगी देखी-
तो चमन के गुलाब क्यो देखें ?

क्या दिया उनको,क्या मिला उनसे-
ताजिराना हिसाब क्यो देखें ?

आखिरे-शब बहा जो आंखो से-
वो लहू था कि आब क्यो देखें ?

क्या गुजरती है इन दिनो दिल पर-
हम ही देखें, जनाब क्यो देखें ?

हमको हर शख्स अच्छा लगता है-
कोई होगा खराब क्यो देखें ?

याद *अनजान* है करम उनके-
दुख मिले बे-हिसाब क्यो देखें ?

❀

ख्वाहिश जो देखी आपके तीरे-नजर मे है-
अरमान जख्म खाने का अपने जिगर मे है।

पढिये कि नाम आपका वाबस्ता तो नही-
अपना तो जिक्र आज की ताजा खबर मे है।

अमनो-अमान दरहमो-बरहम न हो कही-
सुनते हैं इन दिनो वो हमारे शहर मे है।

वो ही समझ न पाये तो समझेगा कौन फिर-
क्यो कश्ती-ए-हयात हमारी भँवर मे है?

सय्याद! फस्ले-गुल का हमे इन्तजार है-
लेकर कफस उडेंगे ये दम बालो-पर मे है।

जो नूर उनके चेहरे पे देखा है दोस्तो-
ऐसी चमक कमर मे न लालो-गुहर मे है।

जिन्दादिली का राज कोई उनसे सीखता-
आँखो मे जिनके आब तो आतिश नजर मे है।

जिसने शबे-फिराक इबादत मे काट दी-
लेने दो नीद लेता अगर दोपहर मे है।

तुम वो सवाल पूछते हो हमसे किसलिये-
जिसका जवाब आपके दीदा-ए-तर मे है।

किस दिलजले की आहो से टकरा के आई है-
तासीर आज लू की सी बादे-सहर मे है।

'अनजान' रास आ गई वीराना जिन्दगी-
दुनिया क्या खाक समझेगी जो सौदा सर मे है।

❀

किस-किससे फिर फरेब न खाना पड़ा हमे-
उस बेवफा से दिल जो लगाना पड़ा हमे।

गो दास्ताने-दर्द नई तो नही मगर-
उनवा बदल-बदल के सुनाना पड़ा हमे।

जो साथ एक पल भी निभाये न निभ सके-
ताउम्र वो ही साथ निभाना पड़ा हमे।

जाये भटक न कारवाने-जीस्त राह से-
मिस्ले-चराग दिल को जलाना पड़ा हमे।

नाखून छिगुली अगुलि का माँगे से जो न दें-
उनके लिये ही सर को कटाना पड़ा पमे।

हमने कभी किसी का सहारा लिया नही-
किस-किसका बोझ सर पे उठाना पड़ा हमे।

हमने तो आज तक न दुखाया किसी का दिल-
दरिया क्यो आँसुओ का बहाना पड़ा हमे ?

कोशिश यही रही कि करे सबको शादमा-
दिल का तो दर्द दिल में छुपाना पड़ा हमे।

'अनजान' हम भी रखते थे फूलो की आरजू-
काटो का कर्ज पहले चुकाना पड़ा हमे।

❀

सर उठेगा न आस्ताने से-
लग गया है सही ठिकाने से।

रज अपनो न कम दिये तो नही-
क्या शिकायत करें जमाने से ?

ईंट रख लेंगे रखनी होगी तो-
हाथ हटा लिजिये सरहाने से।

दिल झुका ही नही जो सज्दे मे-
फायदा क्या है सर झुकाने से ?

दर्द जब हासिले-हयात हुआ-
बाज आये दवायें खाने से।

आंसुओ से तो और भडकेगी-
आग बुझती नही बुझाने से।

सागरो-खुम उदास हैं साकी-
यूँ उठे हम शराबखाने से।

गो असीरे-कफस थे गुलशन मे-
बाज आये न गीत गाने से।

हर तरफ तीरगी का साया है-
रोशनी होगी दिल जलाने से।

उनसे 'अनजान' दिल लगा बैठे-
जो हैं अनजान दिल लगाने से।



शहर सारा उदास-सा क्या है-
हर कोई बदहवास-सा क्यों है ?

जब भी मिलता है रंज देता है-
शख्स वो फिर भी खास-सा क्यों है ?

मुद्दतें हो गईं हैं उनसे मिले-
फिर भी वो दिल के पास-सा क्यों है ?

सांस के साथ-साथ चुभता है-
दिलरुबा दिल में फांस-सा क्यों है ?

जिसका जी चाहे रौंद डाले जिसे-
आदमी आज घास-सा क्यों है ?

कोई हिटलर कुचल दे जब चाहे-
आज हर दिल फ्रांस-सा क्यों है ?

उसने दीपक जला दिया होगा-
तीरगी में उजास-सा क्यों है ?

गर्क रहता है जामो-मीना में-
रिन्दे- अनजान पारसा क्यों है ?

❀

अफलाक की गर्दिश मे गिरिफ्तार नही हू-
फानी हू मगर साया-ए-दीवार नही हू ।

है याद मुझे मैं ही था मस्जूदे-मलाइक-
मैं खाक सही फिर भी शर्मसार नही हू ।

इबलीस ने मासूम-सी हव्वा को खिलाया-
आदम हू मैं गन्दुम का तलबगार नही हू ।

यजदा ने मुझे खुल्दे-बरी से जो निकाला-
मैं अपनी निगाहो मे गुनाहगार नही हू ।

मैं युसूफे-लासानी की तकदीर लिए हू-
मूसा की तरह तालिबे-दीदार नही हू ।

काधे पे सलीब अपने उठा रखी है मैंने-
समझो तो मसीहा हू मैं बीमार नही हू ।

सरचश्मा-ए-रहमत मेरे सीने मे रवा है-
मैं नूह के तूफान का आसार नही हू ।

इन तीरो के बिस्तर पे हू आराम से अर्जुन-
मैं जग में हारा हुआ सरदार नही हू ।

अनजान रवायाते-वफाओ की कसम है-
मैं खुद ही जफाकश हू जफाकार नही हू ।

※

रखवाला घर लुटाने पे जब है तुला हुआ-
बेखौफ आये कोई भी दर है खुला हुआ।

जब आप देख पाये न सूरज चढा हुआ-
देखोगे कैसे यार का चेहरा बुझा हुआ।

तुमको पसद रग जो आये चढाइये-
दामन सफेद और है ताजा बुना हुआ।

हर वक्त चेहरा आपका आँखो मे है बसा-
हक बन्दगी का हमसे यकीनन अदा हुआ।

अब उससे कौन इश्क की रूदादे-गम कहे-
जो शख्स सर-ता-पा है पत्थर बना हुआ।

कारून के खजाने की तफसील मे न जा-
दिल को टटोल देख कि क्या है छुपा हुआ।

दर-दर की ठोकरे क्यो खाता है फिर रहा-
सब जानते है वो तो बहुत है पढा हुआ।

जो शख्स तेरे-मेरे के झगडे मे पड गया-
समझो कि जीते जी ही वो तो मर गया।

शीशे के घर मे बैठकर पत्थर न फेंकिये-
उलटा जवाब दे दगा सर फिरा हुआ।

मायूस अन्दलीब न यू दौरे-खजा से हो-
पामोगी तुम बहार मे हर गुल खिला हुआ।

शायद वो इत्तेफाक से गुजरें इधर से आज-
चौरास्ते पे मैं तो हू कब मे खडा हुआ।

कोशिश तो की भुलाने की उनको हजार बार-
क्या कीजिये लगाव मुसलसिल सिवा हुआ।

रहने दो अब उठाने की कोशिश फिजूल है-
उठ न सकेगा अपनो नजर से गिरा हुआ।

ये रजो-गम, दर्दो-अलम, नालाए-रसा-
सरकार! आप ही की वदौलत अता हुआ।

मतलूब तक न पहुचेगा हरगिज भी ऐसा खत-
अश्को की रोशनाई से हो जो है लिखा हुआ।

नेजे पे सर बुलन्द रहा बादे कत्ल भी-
झुकता नही है हक के लिए सर उठा हुआ।

तुम जान कर के आब इसे पी न जाइये-
इन आसुओ मे खूने-जिगर है मिला हुआ।

जलते हुए अलाव पे पानी न डालिये-
कडवा धुआ ही देगा जबरन बुझा हुआ।

जो शख्स कहकहो पे लगाता है कहकहे-
सच मानिये कि दिल है उसका दुखा हुआ।

तुरबत पे मेरी आके कभी आप देखिये-
कत्वा तुम्हारे नाम का भी है लगा हुआ।

'अजजाज' सब नसीब की बातें है वरना क्यो-
जिसको भी चाहा हमने वो ही बेवफा हुआ।

❀

मायूस हो गये हैं सभी राहबरों से हम-
अरमान कितने लेके चले थे घरों से हम।

होशो-खिर्द दुरुस्त हैं, नियत भी ठीक है-
न जाने लग रहे हैं क्यों सरफिरों-से हम।

तुम प्यार से पुकार के देखो भी तो कभी-
लब्बैक कहते आयेंगे अपने घरों से हम।

अख्बारे-नागहानी की पढ़ते हुए खबर-
कितने करीब होते हैं इन दुख्तरों से हम।

यूं देखिये न नजरे-हिकारत से दोस्तो-
अब्तर नहीं है आपके उन बेहतरों से हम।

क्या कोई उस जमीन पे आकर न रोयेगा-
महरूम जिस जमीं पे हुए है सरों से हम।

अनजान क्यों उड़ान की उम्मीद छोड़दें-
महरूम न रहेंगे हमेशा परों से हम।

❀

क्या हमी बस रह गये हैं आजमाने के लिये-
और कोई ढूंढिये अब गम उठाने के लिये।

क्या जरूरी है सफर में जानू-ए-दिलदार हो-
ईंट रख लेंगे सरहाने थोडा सुस्ताने के लिये।

बर्क से कहिये तहम्मुल से जरा तो काम ले-
तिनका-तिनका चुन रहे हैं आशियाने के लिये।

सिर्फ पानी से न होगी खेतिया सरसब्ज अब-
खूने-दिल भी चाहिये इसमे मिलाने के लिये।

आप वादा करके भी आये नही है बारहा-
मिल ही जाते हैं बहाने, यूं बनाने के लिये।

किसके घर जायें, कहा ये रात काटें हिज्र की-
मौत ही आ जाये सीने से लगाने के लिये।

आदमी को आजकल अनजान ये क्या हो गया-
हर कोई तैयार बैठा है सताने के लिये।

❀

मरने से नही डरते जीने के तमन्नाई-
कुछ सोच समझकर, हो उनके हुए शैदाई ।

सुनते है कि कल वो मरहूम रुख्सत हुआ दुनिया से-
अब मरसिया पढ़िये, कि बजवाइये शहनाई ।

हर जख्म छुपा लेंगे, हसते हुए हम यारों-
क्या इश्क ये चाहेगा, हो हुस्न की रुसवाई ।।

तनहाई से उकता कर इस भीड मे आये थे-
क्या कीजिये याद आये रह-रह के जो तनहाई ।

वो भूल गये होंगे, मजबूर हैं आदत से-
वो आयें कि न आयें, है जान पे बन आई ।।

सय्याद ! कफस मे भी मायूस नही बुलबुल-
सहरा के निकलती है चलती हुई पुरवाई ।

'अनजान' चलो चलकर देखें तो सही उसको-
किस हाल मे जिन्दा है वो इश्क का सौदाई ।

❀

शबे-फुरकत मे वस्ले यार का अरमान तो देखो-
न समझाये से समझे है, दिले-नादान तो देखो।

शिकिस्ता कश्ती है और नाखुदा पर भी भरोसा कम-
गर्जता फीले-बेजजीर-सा तूफान तो देखो।

दिले-अफसुर्दा को सौ रज देने पर उतारू हैं-
हमारे चाहने वालो के ये एहसान तो देखो।

फरिश्ता-सिफत इन्सा हो गये नापैद दुनिया से-
मगर हर गाम पे मिल जाते हैं शैतान तो देखो।

न बरसे वक्त पे पानी, फलक की अजअदाई है-
मशक्कत करने को तैयार है दहकान तो देखो।

फसल इस बार तो उम्मीद से ज्यादा ही थी होनी-
मगर खाली के खाली रह गये खलिहान तो देखो।

मरीजे-दिल अगर अच्छा नही होता तो क्या कीजे-
यगाना अपने फन मे आप है लुकमान तो देखो।

कभी इसकी खुशामद की, कभी उसकी खुशामद की-
हमारे दौर के इन्सान का ईमान तो देखो।

न पहुचे उस तलक आवाज तो क्या कीजिये यारो-
सदाओ पर सदायें दे रहा 'अनजान' तो देखो।



इधर पत्थर, उधर पत्थर, जहा देखो वहा पत्थर-
इस पथरीले शहर मे आदमी भी बन गया पत्थर ।

सितम सहता सितमगर के बिला शिकवा-गिला हसकर-
इलाही ! काश दिल के तू बना देता कोई पत्थर ।

ये लहरें खुद-बा-खुद उठ्ठी नही दिल के समन्दर मे-
किसी की शोख नजरो ने है मारा ताक कर पत्थर ।

तुम्ह इस भीड मे पाकर मुझे अफसोस होता है-
न मारा होता तुमने फूल, कस कर मारते पत्थर ।

वो मारे पहला पत्थर, जो गुनाहो से मुबर्रा हो-
सभी रुख्सत हुए, मारा गया न एक से पत्थर ।

जिसे हम मोम का पुतला समझते आये थे अब तक-
वो पत्थर था, वो पत्थर है, रहेगा कल भी वो पत्थर ।

न मारो शीशमहलो से हमे अब भूल कर पत्थर-
कि दामन मे हमारे भी भरे है ढेर से पत्थर ।

पलस्तर पर पलस्तर कर रहे है कारीगर लेकिन-
जो पत्थर है न बदलेगा रहेगा आखिरश पत्थर ।

किसे 'अलजाम' है फुरसत कि सर फोडे यहा आकर-
रहेगा मुतजिर कब तक हमारी कब्र का पत्थर ?

दर्द को ला-दवा हो जाने दे-
मौत से सामना हो जाने दे।

नींद हमसायों तक की उड़ जाये-
झूम कर गीत ग़म के गाने दे।

नौगिरिफ्तारों में से लगता है-
पख जब तक हैं फड़फड़ाने दे।

जो हमें आज़मा चुके बरसों-
एक दिन उनको आज़माने दे।

तुमने नाखुन बढ़ा लिये होंगे-
ज़ख्म पहले के भर तो जाने दे।

कैफो-मस्ती है छाई नस-नस में-
गीत रिन्दाना गुनगुनाने दे।

चार तिनके जमा हुए होंगे-
बर्क़ को आशियाँ जलाने दे।

तुझको जी भर के देखना है मुझे-
आँसुओं से नजात पाने दे।

बात साक़ी की मान ले जाहिद-
तौबा टूटे तो टूट जाने दे।

मुद्दतों तिश्नालब रहा है जो-
प्यास उस शख्स की बुझाने दे।

जानू-ए-यार पे धरा सर है-
मौत 'अनजाम' आये, आने दे।

꙳

नाला-ए-नीम-शब ने तड़पा दिया उसे-
जोशे-जुनूने-इश्क ने पिघला दिया उसे।

कासिद जवाब खत का न लाया है अब तलक-
ऐसा न हो रकीबो ने बहका दिया उसे।

मैं मयकदे से लौटा था तोबा की सोच कर-
छाई हुई घटाओ ने तुड़वा दिया उसे।

जीने का जो शऊर सिखाने को आया था-
सूली पे जालिमो ने लटका दिया उसे।

उसने कफस मे तोड़ दिया सर पटक के दम-
जाती हुई बहार ने सदमा दिया उसे।

हर एक पे भरोसा किया जिसने जीते जी-
किस-किसने किस तरीके से धोका दिया उसे।

उरियानगी-ए-जिस्म भला कौन देखता-
कफना के दोस्तो ने दफना दिया उसे।

बस एक मेरा नाम सुबहो-शाम लेता है-
खुद अपना नाम तक भी भुलवा दिया उसे।

बेरोजगारो-बेसरो-सामान अब नही-
जुल्फो के पेंचो-खम मे उलझा दिया उसे।

फरजन्दे-आफताब था, बेदाग था करन-
गुस्से मे परशुराम ने ठुकरा दिया उसे।

अनजान उस दीवाने को फुर्सत नही जरा-
आहो-फुगा के काम पे लगवा दिया उसे।

❀

जीना भी ढग से आया न मरना करीने से-
सीखा न जिसने दुनिया मे रहना करीने से।

खूने-जिगर से लिखी है रूदादे-इश्क जो-
ऐ पढने वाले ! उसको तू पढना करीने से।

नाजुकतरीन होता है रिश्ता-ए-दोस्ती-
कहनी हो सख्त बात तो कहना करीने से।

हमसाया कोई दर्द से वाकिफ न हो कभी-
आहो-फुगा करो भी तो करना करीने से।

दामन पे दाग बनके नमूदार हो गये-
इन आसुओ को चाहिये बहना करीने से।

ऐ शम-ए-इन्तजार ! अभी से न माद पड-
लम्बी शबे-फिराक है जलना करीने से।

यादो के फूल-काटे उगे होगे हर तरफ-
ऐ यार ! इस जमीन पे चलना करीने से।

देखो भटक न जाओ कही तीरगी मे तुम-
कदमो को राहे-इश्क मे रखना करीने से।

तौबा अभी-अभी तो है 'अनजान' हमने की-
फिरना पडे जो तौबा से फिरना करीने से।

❀

काश अपना सर हो, पा–ए–यार हो–
बख्ते–खुफ्ता क्यों न फिर बेदार हो ?

आबला–पाई मयस्सर हो हमे–
राहे–मन्जिल होने को पुरखार हो।

जिन्दगी जीने मे लज्जत है वहाँ–
जिन्दगी जीना जहाँ दुश्वार हो।

दरअसल वो है रगे–जाँ से करीब–
चार-सू फिर क्यों तलाशे–यार हो ?

बाज हकगोई से हम न आयेंगे–
फिर मुकद्दर मे कफस या दार हो।

मुश्किलें आसान होने जब लगी–
यूं लगा जैसे हमारी हार हो।

नाखुदा ! लगर उठा, पतवार झेल–
नाव को ले चल जहा मझधार हो।

हक अदा अनजान होगा जीस्त का–
जाँकनी के वक्त वस्ले–यार हो।

❀

ठोकरें खा चुके जमाने की–
क्या जरूरत थी दिल लगाने की ?

चक्कर लगा गई आकर–
नींव रखी जो आशियाने की।

जिन्दगी ने हजारो सदमे दिये–
हम में हिम्मत रही उठाने की।

उनकी जिद है कि वो न आयेंगे–
करिये कोशिश उन्हे बुलाने की।

आजकल मीरे-कारवाँ है जिन्हें–
खुद खबर भी नही ठिकाने की।

अब सितमगर को कौन समझाये–
कोई तो हद हो आजमाने की।

उनको 'अनजान' प्यार है हमसे–
है वजह बस यही सताने की।

✿

कभी गुजरे दिनो की याद मे आँसू बहाते हैं-
कभी भूले हुए लम्हात फिर से याद आते हैं।

कभी दर-पर्दा-ए-नफरत वो उल्फत याद आती है-
कभी दर्दे जुदाई भूल कर हम गुनगुनाते हैं।

कभी बज्मे-हकीकत मे, अकेले डूबे रहते हैं-
कभी बज्मे-तखय्युल, यार के दम से सजाते हैं।

कभी बज्मे-अदू मे भी गये तेरे लिये जालिम-
कभी तेरे ही कूचे से गुजरना भूल जाते हैं।

कभी मसरूर रहते हैं, कभी रजूर रहते हैं-
कभी खामोशियो के गत मे हम डूब जाते हैं।

कभी गैरो से मिलते है, तुम्हारी याद कम करने-
कभी गुमनाम राहो पे, बढाये पाँव, जाते हैं।

कभी कुल्फत-सी होती है, कभी राहत ही राहत है-
कभी हम आहे भरते है, कभी खुशियाँ मनाते हैं।

कभी पैगाम देते हैं कजा को जल्द आने का-
कभी तारीक शब मे जीस्त की शमा जलाते हैं।

कभी फरजानो की सफ मे, हमे फरजाना पाओगे-
कभी दीवानो-सी 'अनजान' हम सूरत बनाते हैं।

उठ गये तेरे दर से अगर दिलरुबा-
याद रखना कि रो-रो के मर जायेंगे।

आ रहे हैं उन्हे छोडकर तो अभी-
दो ही दिन बाद फिर लौटकर जायेंगे।

जिसकी सूरत हो खाना-ए-दिल मे बसी-
उससे दामन बचाकर किधर जायेंगे !

आज हसता है हम पे जमाना तो क्या-
याद रखेगा वो काम कर जायेंगे।

कोई प्यासा न उठेगा मयखाने से-
जाम खाली अगर हैं तो भर जायेंगे।

नीम शब हो गई, साकी ! तू ही बता-
रिन्द इस हाल मे कैसे घर जायेंगे।

ख्वाबे-गफलत मे खोये रहेंगे न वो-
नाले 'अनजान' क्या बेअसर जायेंगे ?

❀

जिसे जिन्दगी से लगाव हो, वो किसी से दिल को लगाये क्या-
जिसे दीनो-दिल का खयाल हो, वो बुतो से आँख लडाये क्यो ?

जो न ताब हुस्न की ला सके, न हो जिसमे जब्त का हौसला-
किसी ममरी-शाहकार का, वो खयाल दिल मे भी लाये क्यो ?

जो हो तल्खियो से नाआश्ना, न हो अपने जर्फ से आश्ना-
वो खयाले-मयकशी क्यो करे, वो लबो से जाम लगाये क्यो ?

जहा हर कदम पे हो मुश्किलें कि सभल के चलना मुहाल हो-
जिसे खौफे-आबला-पाई हो, वो हुदूदे-इश्क मे जाये क्यो ?

जिसे इश्क होता है हमनशी, उसे चैन मिलता कही नही-
जिसे हो तलाश सुकून की, वो दयारे-इश्क मे आये क्यो ?

यहाँ होशमदी हराम है, यहाँ बेखुदी ही का काम है-
ये हरीमे-नाज है दोस्तो, कोई आके होश उडाये क्या ?

कोई कहदे सारे जहान से, यही दर्स ले 'अनजान से-
कोई या तो इश्क करे नही, जो करे तो अश्क बहाये क्यो ?



अहदे-शबाब है तो गुनाह बेशुमार कर-
गर दिल मे हौसला है तो पत्थर से प्यार कर।

इकरारे-जुर्म करता हूँ जो चाहे दो सजा-
आया हूँ दीनो-दिल बुते-काफिर पे हार कर।

परवानावार शम-ए-मुहब्बत पे मर मिटे-
मक्सूदे-जीस्त पा ही लिया जाँ निसार कर।

ऐ पैकरे-जमाल! लगा डाले न नजर-
आईना देखा कीजिये सदका उतार कर।

वादे पे उनके करना भरोसा फिजूल है-
गुजरेगी रात आँखो मे तारे शुमार कर।

मजलूमो-मुफलिसो के लिये दिल मे दर्द हो-
अख्लाक ये अता मुझे परवरदिगार कर।

अनजान मुर्दा जिस्मो मे मैं जान डाल दूं-
बागे-दरा से दुनिया को दू बेदार कर।

꙳

कलम उठा भी तो क्या दिल का हाल लिखेगा-
उरुजे-हुस्न का क्योंकर जवाल लिखेगा ?

तुम्हारे हुस्न को ढलना था, ढल गया होगा-
मगर ये इश्क उसे लाजवाल लिखेगा।

बदल के रह गई तकदीर आने-वाहिद में-
तो कैसे कोई दिनो-माहो-साल लिखेगा ?

न दे सकेगा कोई खुद जवाब जिसका कभी-
तो खत में ऐसा कोई क्यों सवाल लिखेगा ?

तमाम उम्र गुजारी है हिज्र में जिसने-
वो कैसे दोस्तो ! हाले-विसाल लिखेगा ?

तुम्हारे आने से रौनक-सी आ गई घर में-
मगर ये बात भी कब खस्ताहाल लिखेगा ?

कोई बताये कि 'अनजान' मेरा यजदाँ मुझे-
कब अपने हाथ से रोशन-खयाल लिखेगा।

❀

मचाओ शोर कि खामोश हो गया हू मैं–
दिखाओ जलवा कि रूपोश हो गया हू मैं।

बुलन्दी-पस्ती की गर्दिश से खूब वाकिफ हू–
जमाना समझा कि पापोश हो गया हू मैं।

रुखे-जमील पे आँखें जमी रही लेकिन–
दिलो-दमाग से पाबोस हो गया हू मैं।

मुरीद पीरे-मुगां ने बना लिया जब से–
मुसल्ला छोड के मयनोश हो गया हू मैं।

तुम्हारी बज्म मे आने को आ गया लेकिन–
गमो-निशात से बेलौस हो गया हू मैं।

जमाना मिस्ल शिकारी के पेश आता है–
वो सोचता है कि खरगोश हो गया हू मैं।

करम ये साकी का 'अनजान' खास है यारो–
कि जितना पीता हू, बाहोश हो गया हू मैं।

❀

दरमियाँ फिर न फासिले होंगे-
आप-हम दिल से गर मिले होंगे ।

हर कदम पर निशाँ मिले होंगे-
आवला-पा अगर चले होंगे ।

बाद जुम्बिश के लब सिले होंगे-
बाग मे फूल अधखिले होंगे ।

बन्द पलकों के पट खुले होंगे-
बिन खिले फूल फिर खिले होंगे ।

रजो-राहत के सिलसिले होंगे-
वस्ल मे हिज्र के गिले होंगे ।

लोग दरअस्ल वो भले होंगे-
सच के साँचे मे जो ढले होंगे ।

आप 'अनजान से मिले होंगे-
ऐसे दीवाने कम मिले होंगे ।

❀

ख्वाब था, वहम था कि साया था–
चश्मे–दिल मे जिसे बसाया ग ।

खिर्द ने बार–बार समझाया–
जब कदम इश्क मे बढाया था ।

सुर्ख जो खारजार लगता है–
भावला-पा दीवाना गुजरा था ।

भाज सहरा नजर जो भाता है–
कल लबालब भरा वो दरिया था ।

भर्श कितना ही पायेदार सही–
भाज डोलेगा, कल भी डोला था ।

इसको लेकर क्या रोना-धोना है–
लिखा तकदीर का तो होना था ।

भाज सोया है खाक के भन्दर–
पास मैं जिसके चाँदी–सोना था ।

खेल कर रोये टूट जाने पर–
जिस्म मिट्टी का इक खिलौना था ।

जिसको 'अनजान' हम खुदा समझे–
पास पहुँचे तो कितना बौना था ।

❀

तिश्नगी थी कि कम हुई ही नही–
जाम पर जाम कर गये खाली ।

तीरगी दिल की दूर तो न हुई–
हर बरस यू तो आई दिवाली ।

आंखें पथरा गई हैं दहका की–
दूर तक है कही न हरियाली ।

पहरेदारो पे एतबार नही–
अब किसे सौंपें घर की रखवाली ?

दरो-दीवार पर नहूसत है–
कैसे आयेगी घर मे खुशहाली ?

सुबहे-रोशन न जाने कब होगी–
आज की रात है बहुत काली ।

दर पे 'अनजान' आये इज्राईल–
आखिरी सास उनको दे डाली ।

❀

अगयार पे भरोसा है न अपनों पे एतबार–
अल्लाह ही जाने कैसे लगेगा यू बेडा पार।

मैं सिर्फ रेत पाता हूँ हद्दे-नजर तलक–
होने को होंगे दोस्तो दरिया-श्रो-आवशार।

ईमान बेच आये जो मिट्टी के मोल मे–
बाजार मे वो बैठे हैं अब बनके साहूकार।

पहले तो खुद ने हिज्र का बीमार कर दिया–
आये हैं हाल पूछने अब बनके गमगुसार।

'अनजान' जब हयात का अन्जाम मौत है–
पुतला-ए-खाक हूँ तो रहूगा ही खाकसार।

ꕥ

क्या करें ऐसी जिन्दगी लेकर-
जो कि आती है मौत भी लेकर।

मेरे अपसुर्दा दिल की धड़कन में-
यादें आती हैं ताजगी लेकर।

घुप अघेरे में घुट रहा है दम-
कोई आ जाये रोशनी लेकर।

धूप में झुलसा जिस्म जलता है-
यार आ जाओ चाँदनी लेकर।

साकिया! डाल दे नजर अपनी-
कितनी आया हूं तिश्नगी लेकर।

गर नजर से गिरा दिया तूने-
जी न पाऊंगा बेरुखी लेकर।

हम तो 'अनजान' जी लिये बरसों-
सैंकड़ो गम में इक खुशी लेकर।

❀

आग थी जो कभी वो पानी है-
देखिये ये मेरी जवानी है।

आज तो मेरी बात मानी है-
आपकी बहुत मेहरबानी है।

जज्बा-ए-इश्क गैरफानी है-
वरना हर चीज आनी-जानी है।

हमने माना कि बन्दा फानी है-
उसकी तख्लीक गैरफानी है।

हमने दर-दर की खाक छानी है-
दुनिया कैसी है खूब जानी है।

चश्मे-पत्थर में आज पानी है-
ये मेरे गम की तर्जुमानी है-

हमने 'अनजान' आज ठानी है-
आग पानी में अब लगानी है।



शम-ए-उम्मीद को जला रखिये-
रात भर अपना दर खुला रखिये ।

एक ही दर पे सर झुका रखिये-
दिल मे क्यो सैकड़ो खुदा रखिये ?

हिम्मतो-अज्मो-हौसला रखिये-
सिम्ते-मन्जिल कदम बढा रखिये ।

रू-ब-रू उनके मुद्दोग्रा रखिये-
कत्ल होने को सर उठा रखिये ।

मिस्ल बच्चो के होते हैं अरमा-
थपकियाँ दे इन्हे सुला रखिये ।

दौरे - चाके - गरेबाँ आयेगा-
पेशतर इसके तो सिला रखिये ।

चाहे रिन्दो की रहिये सोहबत मे-
खुद को 'अनजान' पारसा रखिये ।

❀

वो तो घोड़े बेच कर सोता रहा–
मैं अकेला रात भर रोता रहा।

शहर सारा जश्न मे मशगूल था–
एक दीवाना मगर रोता रहा।

दिन चढे सरकार पहुँचे रोकने–
कत्ले–आम रात भर होता रहा।

खूने–नाहक के निशा मिट न सके–
अपना दामन धोने को धोता रहा।

सू-ए-मन्जिल कारवाँ रुख्सत हुआ–
मुझ-सा गाफिल नीद मे सोता रहा।

दफन कर आया हूँ मैं अपने उसूल–
लाश जिनकी उम्र भर ढोता रहा।

ये जमी 'अनजान बजर ही रही–
बोने को तो बीज मैं बोता रहा।

ꕥ

दर-ब-दर ढूढता फिरा होगा-
फिर कही सर के बल गिरा होगा।

जो उन्हे प्राईना दिखाता है-
वो यकीनन ही सरफिरा होगा।

जर्द पत्तो मे प्राज लिपटा है-
कल यही पेड फिर हरा होगा।

मौत मे'राजे-जिन्दगी होगी-
जो वतन के लिए मरा होगा।

जिसको तनहाई रास प्राई हो-
प्रपने साये से भी डरा होगा।

तू कसौटी पे कस के देख जरा-
हर हर्फ सोने-सा खरा होगा।

सारी दुनिया का दर्द उसका है-
जो मुहब्बत से दिल भरा होगा।

प्राज 'अनजान' तनहा बैठा है-
कल यही भीड मे घिरा होगा।

❀

फलसफी का फलसफा कुछ काम ही आया नहीं-
जिन्दगी जीने का ढग हमको समझ आया नहीं।

दिल हमे अल्लाह ही जाने, आ गया लेकर कहाँ-
इक समन्दर रेत का है, दूर तक साया नहीं।

मन्जिले-मकसूद पे पहुँचेगा कोई किस तरह-
तन थका है, मन दुखी है, पास सरमाया नहीं।

शहर के अदना-ओ-आला थे जनाजे मे शरीक-
हम मरे जिसके लिये, वो तो नजर आया नहीं।

चाहे इस्तकबाल मे सारा जमाना हो खडा-
जो गिरा नजरो से अपनी फिर वो उठ पाया नहीं।

मुज्दा-ए-फस्ले-बहारां अब कोई लाये तो क्या-
गुन्चा ए-दिल फिर किसी सूरत भी खिल पाया नहीं।

बेसरोसामानी कोई देखता 'अनजान' की-
जो शरीके-दर्द हो, हमराजो-हमसाया नहीं।



राजाओ का राज गया, कल था लेकिन आज गया-
कल क्या होगा कौन कहे, कल के भरोसे आज गया।

बगलें बजाने वाले हैं, तबले बजाने वाले हैं-
सप्त-सुरो के ज्ञाता बोले, महफिल मे से साज गया।

मन की व्यथा मन ही मे राखो, दुखियारो के दुख को बाटो-
किसके लिये रोना-धोना है, जब जग से हमराज गया।

इन उखडी सासो को थामो, चाहे थको लेकिन न बैठो-
अपने दम पर जीना सीखो, गम न करो गमसाज गया।

बूंद-बूंद पानी को तरसे, घडे लिये निकले थे घर से-
बरसा न बरसने वाला था, काला बादल गाज गया।

सोनें वाले जाग पड़ो, भागमभाग है भाग चलो-
बहरे लोग नही सुनते हो, गजर सुबह का बाज गया।

गाँव-घाट-घर छूट गया, 'अनजान' शहर को कूच किया-
खेत गया, खलिहान गया, और पुश्तैनी काज गया।



फिर उन्ही के खयाल मे उलझे–
उनके रुखसारो-वाल मे उलझे ।

जिसका देना जवाब मुश्किल है–
फिर उसी इक सवाल मे उलझे ।

दीनो-दिल दोनो हाथ से निकले–
एक काफिर-जमाल मे उलझे ।

कब वो आये-गये खबर ही नही–
हम यू उनके खयाल मे उलझे ।

हर कोई दिल को थाम लेता है–
जाने हम कैसे हाल मे उलझे ।

आज तक लोग ढूढते हैं हमे–
जाने हम किस वबाल मे उलझे ।

जिसको अनजान इश्क कहते हैं–
कोई ऐसे न जाल मे उलझे ।

✿

तू भी मेरी तरह खराब हो, वो भी दिन कभी तो खुदा करे-
तेरे दिल को दर्द हो वो अता, न कोई भी जिसकी दवा करे।

शबे-गम तुझे भी नसीब हो, न कोई भी तेरे करीब हो-
तू अकेला आहें भरा करे, न कोई भी साथ दिया करे।

तुझे शबगुजार न मिल सके, न कोई भी गम में शरीक हो-
तेरे दिल से टीस उठा करे, न कोई भी जिसको सुना करे।

मेरी तरह तुझको मिले सिला, तेरे प्यार और खुलूस का-
तू भी जिसके साथ वफा करे वो ही तेरे साथ जफा करे।

शबे इन्तजार तेरे लिये मेरी तरह इतनी तवील हो-
तुझे नींद आये न ख्वाब हो, यूं ही रात भर तू जला करे।

जो बहार आये तो संगदिल, तू खजाँ की जद में रहा करे-
जिस शाख पे हो तेरा आशियां, शबो रोज बर्क गिरा करे।

जो तड़प मिली '*अनजान*' को, न किसी को तेरे सिवा मिले-
जो अदू को भी न नसीब हो, वो तुझे नसीब हुआ करे।

ঔ

सिवा तेरे दिल मे कोई नही, 'य यकीन कैसे दिलाऊँ मैं–
तू ही दे बता कोई रास्ता, तुझे दिल से कैसे भुलाऊँ मैं ?

तेरी याद आती है हर नफस, तेरी शक्ल दिखती है हर तरफ–
जो हसूले-जिन्दगी बन गया, वो खयाल कैसे भुलाऊँ मैं ?

तेरी हर जफा के जवाब मे, मैं वफा ही पेश किये गया–
यही गर खता है तो जानेमन ! तुझे अपना कैसे बनाऊँ मैं ?

मेरी ख्वाबगाह मे थी रोशनी, तेरे दिलफरेब वजूद से–
बिना तेरे तू ही बता मुझे कि चराग कैसे जलाऊँ मैं ?

कई तोहमतें मेरे नाम पर, तेरी वजह से लगी बारहा–
मुझे इनसे इतना लगाव है, कि खराब कैसे बताऊँ मैं ?

जो तेरी नजर ने दिया मुझे, वो सुरूर रहता है रात-दिन–
मैं कदम सभालू तो किस तरह, ये खुमार कैसे छुपाऊँ मैं ?

दो खता बता 'अनजान' की, मुझे कब सजा से गुरेज है–
तेरी बारगाहे-नियाज मे, ये निगाह कैसे उठाऊँ मैं ?

❀

तुम्हारी बेवफाई भी, तसल्लीबख्श लगती है–
कि हर मजनूर की सूरत, हमे अपनी-सी लगती है ।

फरिश्तो को भी हैरत है, हिले है अर्श के पाये-
असर होता है उसमे, आह जो दिल से निकलती है ।

अगर है हौसला तुझमे, तो चल पड राह पर अपनी–
कफे अफसोस मलने से, कही मन्जिल भी मिलती है ?

सिला हमको वफाओ का, मिले या न मिले लेकिन–
है कौले-हकवयाँ कि सच के आगे दुनिया झुकती है ।

अगर इल्जाम आता है, मुहब्बत मे तो आने दो–
मुहब्बत दुनिया वालो की, कहाँ परवाह करती है ?

करोगे याद रह–रहकर, चले जाने पे तुम हमको-
हमारे दम से ही शम-ए वफा, महफिल मे जलती है ।

हमें 'अनजान' समझाने की, कोशिश क्यो करे कोई–
जो रग–रग मे बसी हो, वो कही आदत बदलती है ?

❀

कोई तिनका न बच जाये कहीं पर आशियाने का–
इरादा कर लिया तूने अगर बिजली गिराने का।

मेरी बरबादी मे तू भी कसर किस वास्ते छोडे-
मुझे बरबाद करने का इरादा है जमाने का।

टपकती है उदासी जर्रे-जर्रे से गुलिस्ता के–
कोई लाता नही पैगाम फस्ले–गुल के आने का।

तलातुमखेज मौजो से बचाना उसको मुश्किल है-
इरादा नाखुदा रखता खुद है कश्ती डुबाने का।

जुबां पर नाम अब तेरा नही आता है भूले से–
हुआ है खात्मा कैसा मुहब्बत के फसाने का।

तबीअत भर गई 'अनजान' अब तो रब्ते–बाहम से–
इरादा कर लिया है जिन्दगी तनहा बिताने का।



इक आग-सी सीने मे, दिन-रात सुलगती है-
न मांद ही पड़ती है, न तेज भड़कती है।

बरबादी-ए-हस्ती का, हम किससे गिला करते-
हर एक मेहरबां की तस्वीर उभरती है।

कुछ भी तो नही ऐसा, हम जिसके लिये जीते-
बेसूद यूँ ही कब से ये उम्र गुजरती है।

घनघोर अंधेरे मे कुछ भी तो नही दिखता-
मवहूम-सी इक सूरत, साये-सी गुजरती है।

हैरान है क्यो दुनिया हम खानाखराबो पर-
मुश्किल ही से बसती है जो बस्ती उजड़ती है।

टकरा के किनारो से, खुद लौट पड़ी वापस-
इस दिल के समन्दर मे, जो लहर मचलती है।

अनजान मुहब्बत मे होता है यही अक्सर-
कुछ बोलने से पहले, आवाज लरजती है।

❀

जाने क्या दिल को हुआ है, तेरे बाद—
खोया-सा रहने लगा है, तेरे बाद।

ये गली-कूचे, दरो-दीवार, चौराहे वोही—
शहर बदला-सा लगा है, तेरे बाद।

जो हमे ले आया था इतना करीब—
याद उस पल को किया है, तेरे बाद।

वो सुरूरो-कैफ वो मस्ती कहाँ—
यूँ तो पीने को पिया है, तेरे बाद।

सिर्फ रस्मन ही मिला हर एक से—
जो कोई मुझसे मिला है, तेरे बाद।

किस कद्र रखता है तुझको दिल अजीज—
भेद ये मुझ पर खुला है, तेरे बाद।

तू मेरा महबूब, मन्जूरे-नजर, आरामे-जाँ—
जाने तू क्या-क्या लगा है, बाद।

हाँ यही 'अनजान' होगी इन्तिहा—
दर्द ही दिल की दवा है, तेरे बाद।



मलकुलमौत बार-बार आये-
जिस्म मे जाँ नही क्या ले जाये ?

देखो उस शख्स को कि हसता है-
जुल्म दुनिया ने कम नही ढाये ।

दिल तो दिल है कोई तिफ्ल नही-
कब तलक कोई दिल को बहलाये ।

उससे पूछो कि दर्द क्या ग़ै है-
गीत खुशियो के जिसने हैं गाये ।

आग लग जाये चाहे दुनिया मे-
तू मगर इसकी जद मे न आये ।

मौत ही आखिरी पडाव नही-
मरने वाले को कौन समझाये ?

जल रहे हैं जो तेज धूप मे हम-
काश ! फैला दो जुल्फ के साये ।

नालाकश इस कद्र रहा वो शख्स-
रात भर सो न पाये हमसाये ।

चैन से वो न जीने देंगे कभी-
हम तो 'अनजान' उनसे भर पाये ।

जो शख्स गिरिफ्तार रहा उनकी चाह मे-
गुमनाम वो भटकता रहा बरसो राह मे।

युसुफ बाज़ारे-मिस्र मे नीलाम जब चढे-
चाहत खरीदने की रही मुफ्लिस-श्रो-शाह मे।

जिस रोशनी को तरस गये हम तमाम उम्र-
वो रोशनी नसीब हुई कब्रगाह मे।

समझा न कोई मेरी हिकायाते-दर्द को-
हर इक को डूबा देखा है बस वाह-वाह मे।

तुम भी कही दबे हुए मलबे मे देखलो-
न जाने कौन-कौन था इस दिल तबाह मे।

तुमने जिसे दिलेर समझ कर के चाहा था-
तगदिल-श्रो-तगखयाल है खुद की निगाह मे।

'अनजान उनके हौसले की दाद दीजिये-
खन्दापेशानी श्राये हैं जो कत्लगाह मे।

꙳

जब तेरी तरफ देखा, नजरें लो फिरा तूने-
ऐ यार सितमपेशा ! अच्छा न किया तूने।

क्या तेरा बिगड़ जाता, गर राह में न मिलता-
क्यों दौरे गुजिश्ता को, ला याद दिया तूने।

उल्फत न सही फिर भी, रस्मन ही मिला होता-
कस्दन क्यों चला आया, क्या ठान लिया तूने ?

बतलाये कोई कैसे, ये फासिले कम होंगे-
खामोश रहे हम भी, कुछ भी न कहा तूने।

मातम न करे कह दो, गुलजार की बुलबुल को-
बदनामी-ए-गुलशन है, नाला जो किया तूने।

पैगामे-बहारां है, दीवाने जरा सुन ले-
सदचाक गिरेवां कर, जो कि है सिया तूने।

आसाइशे-जन्नत के, सामान नजर आये-
भूले से जो वाइज को, दी रिंद पिला तूने।

कुछ और करीने से जीने की जरूरत है-
बेसूद गया अब तक, जो कुछ भी जिया तूने।

अनजान उसे कहिये कि जंगो-मुहब्बत में-
जायज है सभी कुछ वो, अब तक जो किया तूने।

❀

हम गर्दिशे-अय्याम के मारे हुए तो हैं-
आखिर मे जीत होगी, अभी हारे हुए तो है ।

जब चाहे माग लेते, पल भर मे जान देते-
ये बात दिल मे बरसो से धारे हुए तो है ।

कल चाहे फासिले हो, दोनो के दरमिया-
इस वक्त वो करीब, हमारे हुए तो है ।

दर-दर की चाहे ठोकरें खाना पडे हमे-
तस्वीर उसकी दिल मे, उतारे हुए तो है ।

किस-किससे कीजियेगा, जफाओ का तजकरा-
माना कि उनके जुल्म के, मारे हुए तो हैं ।

अब देखियेगा वादा वफा वो करेंगे कब-
खल्वत मे आज आने के इशारे हुए तो है ।

अनजान अब शहर मे कोई आश्ना नहीं-
दो-चार लोग इनमे से प्यारे हुए तो हैं ।



आफताब क्यों बुझा-बुझा-सा है-
रात को हादसा हुआ क्या है ?

आप नाराज जिससे हो जायें-
आपसे ऐसा कुछ कहा क्या है ?

वो खफा किसलिये हुए हमसे-
कोई बतलाये माजरा क्या है ?

चारागर सर पकड़ के बैठ गये-
मर्ज समझे भी तो दवा क्या है ?

जो उतर जाये दिन निकलते ही-
ऐसे पीने से फायदा क्या है ?

अर्श तक जो पहुँच नहीं पाये-
दिले-मजलूम फिर दुआ क्या है ?

इतना तूफान क्यों मचा हर-सू-
जुज तेरे नाम के लिया क्या है ?

खून होता तो बहता आँखों से-
वरना इस रोने में धरा क्या है ?

आप ऐसे तो हो नहीं सकते-
आपके बारे में सुना क्या है ?

इश्क 'अनजान' जानता ही नहीं-
इब्तिदा क्या है, इन्तिहा क्या है ?

❀

कब तलक कोई दिलासा दिल को दे बतला तो दे-
एक पल आकर दिले-मुज्तर को तू बहला तो दे।

मैंने माना बरुखी है, तेरी आदत मे शुमार-
मैं हू तेरे चाहने वालो मे, ये जतला तो दे।

न सही तुझको मुहब्बत, न सही मुझसे लगाव-
बावजूद इसके हू तेरा, ये यकी दिलवा तो दे।

रात-दिन उसके तखय्युल मे तडपता है मगर-
ऐ दिले-नाकाम! उसको भी कभी तडपा तो दे।

शहर मे हर सिम्त छाया है सुकूते-मर्ग-सा-
ऐ सदाये-जीस्त! इस मन्जर मे हलचल ला तो दे।

काधा देने वो न आये, उसकी मर्जी है मगर-
मेरे मरने की खबर उस तक कोई पहुँचा तो दे।

वो शरीके-मय नही, 'अनजान' उसके नाम से-
सागरे-लबरेज भर कर, सामने रखवा तो दे।

❀

इरादे-ग़मे-उल्फ़त हर एक से क्या कहते-
कह डाली अगर होती, बेचैन-से क्यों रहते ?

जाहिद को पिला साकी ! कुछ सहमा-सा आया है-
मस्जिद में अगर मिलती, मयखाने में क्यों फिरते ?

चाहा न अगर होता, बाँहों का सहारा तो-
कमजोर नहीं थे हम, इस तरह से क्यों गिरते ?

कुछ बात तो है शमा, खामोश रहो चाहे-
अन्जाम से वाबाकिफ परवाने ये क्यों जलते ?

मा'बूदे-नजर अपना, जुज उसके नहीं कोई-
जब मिल ही गये उससे, हर एक से क्यों मिलते ?

पथराई निगाहों से देखा न अगर होता-
झरने ये पहाड़ों की फिर गोद से क्यों बहते ?

अनजान अभी उनको जी भर के नहीं देखा-
गर देख लिया होता तो प्यास से क्यों मरते ?

❀

ये दर्द ही हमको तो विरासत मे मिला है–
तुम देखलो क्या हमको मुहब्बत मे मिला है ?

सय्याद के भ्रव दाम मे दम तोड रहे है–
ये रज हमे फूलो की चाहत मे मिला है।

वो शख्स फटेहाल-सा क्यो फिरता है पूछो–
जिसको कि जरो–माल विलादत मे मिला है।

ये रजो-अलम, जुल्मो-सितम और तडपना–
सरमाया हमे यार की उल्फत मे मिला है।

सर जाये तो जाये, न झुके जुल्म के आगे–
ये दस शहीदो की शहादत मे मिला है।

जो शख्स हमे उम्र मे, इक बार मिला था–
वो शख्स हमे आज कयामत मे मिला है।

हर वक्त तेरा जिक्र, तेरी याद, तेरा नाम–
वो लुत्फ हमे तेरी इबादत मे मिला है।

जिसको भी यहाँ देखिये मसरूफ मिलेगा–
हम जैसा ही दीवाना कोई फुरसत मे मिला है।

वो पुर्सिशे-अहवाल को तशरीफ जो लाये–
आराम बडा दिल को अलालत मे मिला है।

खुद फैसला कर लीजिये करना है तुम्हे तो–
इन्साफ यहाँ किसको अदालत मे मिला है?

हादम–

हर शख्स नावाकिफ है जीया जाता है कैसे-
जिसको भी यहाँ देखिये गफलत मे मिला है।

आराम से दो बाते ही मिल-बैठ के करता-
फुर्सत है कहा उसको जो उज्लत मे मिला है।

मत पूछिये क्या गुजरी शबे-तार मे हम पर-
हर दद हमे आपकी फुर्कत मे मिला है।

जो नूर कभी जीते हुए आँखो ने न देखा-
वो नूर हमें देखिये तुरबत मे मिला है।

फरियाद कभी होटो पे फरहाद न लाया-
ये जर्फ उसे कोह की सोहवत मे मिला है।

'अनजान वो ही दर्द है मे'राजे-मुहब्बत-
जो दर्द हमे उनसे इनायत मे मिला है।

रूठे है बेसबब जो उन्हे क्यो मनाइये—
समझे न दिल की बात उन्ह क्यो सुनाइये ?

बावर उन्हे वफाग्रो का क्यो दिलाइये—
वो जिस जगह खडे है उन्हें क्यो हिलाइये ?

वो ही समझ सके न मेरे गम का माजरा—
रूदादे-दर्द फिर क्यो जहाँ को सुनाइये ?

मुँह देखे की प्रीत, मिलाते है हाथ भी—
बन जाये बात दिल से ग्रगर दिल मिलाइये।

हर ग्रान उसका जिक्र रहा है जुबान पर—
मुमकिन कहाँ है उसको कि दिल से भुलाइये ?

गर हो सके तो दर्द को रूपोश रहने दो—
पूछे कोई मिजाज तो बस मुस्कुराइये।

हमको तो साथ रहने की ग्रादत-सी हो गई—
काँटो से ग्राप ग्रपना तो दामन बचाइये।

अनजान उनके ग्राने की उम्मीद है कवी—
ग्रपने गरीबखाने को चलकर सजाइये।

❀

जख्म सीने के कब के भर जाते–
हाथ गर आप इन पे धर जाते।
याद करता जमाना बरसों तक–
काम ऐसा कोई तो कर जाते।
जिस्म हारा थका निढाल सही–
खन्दापेशानी दार पर जाते।
मन परिंदों–सा उड़ता फिरता है–
गर तुम्हारा था कैद कर जाते।
उनकी यादों ने थाम रखा है–
वरना हम तो कभी के गिर जाते।
आखिरे–शब वो आ गये मिलने–
मुस्कुरा उठे तारे घर जाते।
उनकी चौखट पे पड़ रहेंगे अब–
क्यों भटकने को दर–ब–दर जाते।
चन्द लम्हे जो साथ में गुजरे–
काश वो उम्र भर ठहर जाते।
आपको किसने रोका है यारो–
आँखों से दिल में भी उतर जाते।
तिनका–तिनका जमा किया हमने–
आँधियां चलती तो बिखर जाते।
बेगुनाही की पा रहे हैं सजा–
काश कोई गुनाह कर जाते।
दिल की अनजान रह गई दिल में–
कोई तो मिलता जिसपे मर जाते।

तेरा खयाल आ गया बेसाख्ता मुझे–
गर मैं गुनाहगार हू तो दे सजा मुझे ।

अब तक तेरे फिराक मे गुजरी है जिन्दगी–
किसने कहा कि वस्ल का तू दे मजा मुझे ।

तू दिलरुबा है, जाने-वफा, हासिले-हयात–
तुझसे गिला हराम है, तू दे मिटा मुझे ।

तेरी निगाहे-नाज ने मजरुह कर दिया–
मुमकिन नही कही भी मिलेगी शिफा मुझे ।

तेरा असीर हू जब चाहे कर रिहा–
वरना बुरा है क्या, कर न रिहा मुझे ।

दुनिया के रजो-गम से आजाद कर दिया–
उस दिलरुबा ने दर्द किया वो अता मुझे ।

दिल लेके इन दिनो 'अनजान' बन गये–
क्या कीजिये, पसद है ये भी अदा मुझे ।

✿

मैं अपनी दास्ताने-दिल सुना लू तो चला जाऊँ-
जो मुझसे रूठा है उसको मना लू तो चला जाऊँ।

तेरे दीदार की हसरत कहीं फिर खींच न लाये-
तेरी तस्वीर आँखों मे बसा लू तो चला जाऊँ।

जमाने की तरह तू बेवफा कह न सके मुझको-
यकी अपनी मुहब्बत का दिला लू तो चला जाऊँ।

अभी तक तो मुहब्बत ही मुहब्बत देखी है तूने-
मैं अपने दाग सीने के दिखा लू तो चला जाऊँ।

मैं नादिम हूँ तेरी महफिलमे इस बेवक्त आने पर-
मैं अपने हाल पर आँसू बहा लू तो चला जाऊँ।

बका-ए-गैरफानी है मुहब्बत मे फना होना-
वजूदे-जिन्दगी का राज पा लू तो चला जाऊँ।

शबे-फुर्कत के सदमो से अभी अनजान है यारो-
उसे अपना शरीके-गम बना लू तो चला जाऊँ।

आहो-फुगाँ के बाद हसाया गया हूँ मैं–
कैसे कहूँ कि कैसे सताया गया हूँ मैं ?

मेरे बग़ैर रौनके-महफ़िल मुहाल थी–
बुझने लगा तो फिर से जलाया गया हूँ मैं।

मैं हूँ चरागे-राह सभी जानते थे फिर–
फर-कर के साजिशें क्यों बुझाया गया हूँ मैं ?

कल तक निशाने-मन्ज़िल सबके लिये मैं था–
फिर जान-बूझकर क्यों मिटाया गया हूँ मैं ?

हैरत से देखिये न मुझे इस तरह जनाब–
गोहर था आब का जो गिराया गया हूँ मैं।

गिरती है बर्क़ मेरे नशेमन पे बार-बार–
किस शाखे-गुल पे ला के बिठाया गया हूँ मैं ?

'अनजान' मयक़दे ही से निस्बत है आजकल–
दैरो-हरम से कब का उठाया गया हूँ मैं।

❀

ऐ गर्दिशे-अय्याम ! तेरा एहसान है कितना-
दिल तेरी बदौलत ये, परेशान है कितना ?

आवाज किसे देते, किसे पास बुलाते-
हर एक गली-कूचा, सुनसान है कितना ?

जख्मों से जिगर छलनी, सौ दाग लिये दिल है-
इक यार की फुर्कत में, ये सामान है कितना ?

हमराज कोई होता तो, हम राजे-दिली कहते-
हमदर्द मिले हमको भी, अरमान है कितना ?

खुद कर लोगे अन्दाजा, कश्ती में चले आओ-
साहिल पे क्या बतलायें कि तूफान है कितना ?

तुम जब से गये रूठ के, ऐ जाने-तमन्ना-
माहौल शबिस्तान का, वीरान है कितना ?

'अनजान' बदल शक्लो-शबाहत न गई हो-
आईना हमें देख के, हैरान है कितना ?

ꕥ

जानेमन ! पास मे आओ कि ज़रा जी वहले-
रुख से पर्दा ये हटाओ कि जरा जी वहले ।

जाम आखो से पिलाओ कि जरा जी वहले-
ये नशा और बढाओ कि जरा जी बहले ।

मीर की गजल सुनाओ कि जरा जी वहले-
बर्बते-साज उठाओ कि जरा जी बहले ।

कितना वीरान है इस दिल का शहर तेरे बिना-
तुम जरा देर ही आओ कि जरा जी बहले ।

जिन्दगी तल्खी-ए-माहौल से बेजार है अब-
रुखे-रोशन को दिखाओ कि जरा जी बहले ।

कब से 'अनजान' जुदाई का अलम सहता है-
मुज्दा-ए-वस्ल सुनाओ कि जरा जी बहले ।

❀

थोडी देर और यूँ ही चलने दो-
जिक्र उस यार का अभी यारो !

उसको जी भर के देखने दो अभी-
प्यास दिल की नही बुझी यारो !

उसकी आवाज जो सुनी हमने-
सास चलने लगी रुकी यारो !

वो हमे याद करते रहते है-
ये खबर हमने भी सुनी यारो।

छोड दो तनहा तो करम होगा-
रात आधी तो ढल चुकी यारो !

लम्बा-चौडा हिसाब रहने दो-
मुख्तसर-सी है जिन्दगी यारो !

उनको चाहा है, उनको याद किया-
बस यही की है बन्दगी यारो।

तीरगी है कि दूर होती नही-
जाने कब होगी रोशनी यारो !

आप अनजान को नही समझे-
है निराला हो आदमी यारो !

꧁

कोई साबित कदम रहे कैसे-
हर कदम जलजले-से मिलते हैं ।

फिर सुकू दिल को मिल नही सकता-
वो अगर फासिले से मिलते हैं ।

उसका ही दर खुला नही मिलता-
यूँ तो सौ दर खुले-से मिलते हैं ।

आप शायद इधर से गुजरे है-
राह मे गुल खिले-से मिलते हैं ।

कोई राहबर ही राहजन निकला-
गुम कई काफिले से मिलते हैं ।

दिल से जब दिल मिला नही सकते-
लोग फिर क्यो गले से मिलते हैं ।

नग्माजन बुलबुलें रहे कैसे-
जब नशेमन जले-से मिलते हैं ।

रोया होगा लगा के आग कोई-
घर ये जो अधजले-से मिलते हैं ।

दफ्न 'अनजाना' हो चुके अरमाँ-
होट जो अब सिले-से मिलते हैं ।

※

संगरेजे है चमकते हुए तारे तो नही-
सहरा है समन्दर के नजारे तो नही।

अश्क आँखो मे तेरी याद मे आ जाते हैं-
साथ देने को मुसलसिल ये सहारे तो नही?

यूँ तो कुछ कहते नही, होंट सिये बैठे हैं-
उनकी आँखो मे जरा झाक इशारे तो नही।

तेज तूफान से कश्ती को बचा लाये हैं-
कोई साजिश किये बैठा है किनारे तो नही?

इनको दामन मे छुपा लेना कहाँ मुमकिन है-
बर्फ की गेंद के मानिन्द शरारे तो नही।

शग्ल कोई तो जरूरी है यहाँ जीने को-
जीस्त बेमा'नी-ओ-मक्सद के गुजारे तो नही।

दर्द देता है मजा दोस्तो! तनहाई मे-
कोई ऐसे मे मसीहा को पुकारे तो नही।

आप चलने का कहे, दौड पडेंगे यारो-
तन थका होगा मगर मन से यूँ हारे तो नही।

किसने अनजान अभी समझा है दीवानो को-
वक्त क्या चीज है, ये वक्त के मारे तो नही।

❀

जितना जीवन अभी बिताया है-
हर कदम पर फरेब खाया है।

यूँ न मगरूर पा के हो दौलत-
धूप है तो कभी ये छाया है।

जान-सी पड़ गई फसाने में-
उस परीवश का जिक्र आया है।

उनकी अगवानी को अंधेरे में-
हमने दिल का दीया जलाया है।

ताजगी है लबों पे फूलों के-
कौन गुलशन में मुस्कुराया है ?

जीते-जी के तमाम झगड़े हैं-
कौन अपना यहाँ पराया है ?

बात जो सच थी, सच कही हमने-
सच के खातिर ही सर कटाया है।

नक्श होकर के रह गया दिल पर-
नाम कागज से तो मिटाया है।

मौत 'अनजान' चैन दे शायद-
जिन्दगी ने बहुत सताया है।



सिर्फ तूफान रास आया है–
हम नही जानते है साहिल को।

ये अलग बात है कि नाम न लें–
खूब पहचानते हैं कातिल को।

सिर्फ दो मीठे बोल ही दे दी–
खाली लौटाइये न साइल को।

कारवाँ कब का हो गया रुख्सत–
कोई आवाज तो दे गाफिल को।

वो वफा-आश्ना नही हर्गिज–
कितना समझा चुके हैं इस दिल को।

खौफ मिलने पे है जुदाई का–
कौन समझेगा ऐसी मुश्किल को ?

एक 'अनजान जो नही शामिल–
जाने क्या हो गया है महफिल को ?

꙳

चल ही पड़ा है जिक्र अगर सोजो-साज का–
बरजस्ता नाम आयेगा उस दिलनवाज का।

मस्जिद को शेख जाओ, मुअज्जिन ने दी सदा–
रिंदों का मयकदे में पहर है नमाज का।

गर्मी-ए-इश्क, हुस्न की शोखी का ये जवाल–
महमूद का कुसूर कहे या अयाज का?

उसने दिये फरेब मुसलसिल जो आज तक–
मस्लक तलाश करते रहे हम जवाज का।

शायद हो रोजनामचे में दर्ज सारा हाल–
पिंडारियों की लूट, मुगलिया खराज का।

उठते ही चेहरा आपका दिखलाई दे गया–
अब देखते हैं कैसे कटे दिन ये आज का?

होते ही रात जानिबे-मयखाना चल पड़े–
दिन भर तो दौरदौरा है वाइज के वाज का।

हैरान चारासाज मगर मुत्माईन मरीज–
क्या कीजिये इलाज कोई लाइलाज का?

*अनजाम आजकल है परेशान हर कोई–
न जाने हाल कैसा है उस फित्नासाज का?



तनहाई मे कल बीता है, तनहाई मे कल बीतेगा–
आज भीड से भरा हुआ मन, निस्सदेह कल रीतेगा।

छायाओ को ठोस समझकर, बाँहो मे भरना चाहा–
वक्ष स्थल पर घाव लगा है, आज नही तो कल टीसेगा।

हारे का हरि नाम है प्यारे, मन के हारे हार हुई–
जो इस मन से हार न माने, आज नही तो कल जीतेगा।

माँओ से सतान छिनी है, बहनो से बिछुडे भाई–
उत्तर क्या दोगे मेरे पुत्रो! पूछने वाला कल पूछेगा?

आज हवा खामोश बहुत है, गुमसुम हैं पौधे-पक्षी–
यह ससार वाचाल बहुत है, आज नही तो कल बोलेगा।

देखते ही मरवा दो गोली, चिडी का पूत दिखाई न दे–
झगडो के इस मौसम मे मन, आज नही तो कल नाचेगा।

सपनो के सौदागर बोलो, बोल रहे हैं जिस्मो की–
जिस्मो का व्यापार ये सारा, आज नही तो कल डूबेगा।

गुण्डा और बदमाश सही, इस बस्ती का बाशिन्दा है–
आज बहुत बिगडा है लेकिन, देखिये आकर कल सुधरेगा।

कहना मेरा मान ले बेटे, मैंने दुनिया देखी है–
आज अगर बच भी आया है, जेल मे चक्की कल पीसेगा।

पहरेदार हमारे घर के, मिले हुए हैं चोरो से–
आज अगर न लूट सका है, लूटने वाला कल लूटेगा।

रूठना होता उसको यारो! रूठ गया होता कब का–
आज अगर अनजान न रूठा, क्या कहते हो कल रूठेगा।

ꕥ

दिल को दुखाइये न यूँ–
दामन छुडाइये न यूँ ?

आये हो बैठो चैन से–
आते ही जाइये न यूँ ?

इन्सान हूँ मैं सग नहीं–
ठोकर लगाइये न यूँ ?

जो खो गया सो गया–
खोकर पछताइये न यूँ ?

दिल को लगे जो बोझ-सा–
उसको उठाइये न यूँ ?

सुनकर हैं सोये लोरियाँ–
उनको जगाइये न यूँ ?

गुम कारवा हो जायेंगे–
दीपक बुझाइये न यूँ ?

मन्जिल के हम निशान हैं–
हमको मिटाइये न यूँ ?

अनजान याद करता है–
उसको भुलाइये न यूँ ?

❀

इन्साफ चाहिये न हमें कोई फैसला–
मुन्सिफ को जानते है कि मुजरिम से है मिला ।

होगा अगर यजीद तो होगे हुसैन भी–
डरता है कौन सामने चाहे हो कर्बला ।

अब मीठी-मीठी बातो से बहलाना छोड दे–
कर तल्ख कोई बात कि जाऊँ मैं तिलमिला ।

मैं आया, आप आये, कई आये और गये–
चलता रहेगा दुनिया मे यूँ ही ये सिलसिला ।

इन्सान आज रस्मे–मुहब्बत भुला चुका–
रहता है जोड-तोड मे हर वक्त मुब्तिला ।

बनवाई हैं इमारतें मजबूत किस कद्र–
फिर भी बशर तो फानी है, पानी का बुलबुला ।

आया खुदा ये पूछने, तकलीफ तो बता–
'अनजान' पाया अर्श का लगता है कि हिला ।

꧁

मुमकिन है किसी मोड़ पे मिल जाय दुबारा–
फिर तर्के-तग्राल्लुक हो भला कैसे गवारा ?

जो शिकवे-गिले बाहमी पैश ग्राते है यारो–
करते है मुहब्बत की तरफ साफ इशारा।

लज्जत के लिये दर्द उठाना है जरूरी–
गम होगा नही दिल मे तो होगा क्या मदावा ?

जिस यार को बरसो से बसा रखा है दिल मे–
क्या ज़िक्र करें उसने रुलाया कि हसाया ?

उस बज्म मे फिर रौनकें ग्राई न पलट कर–
जिस बज्म से उठ ग्राये थे हम करके कनारा।

है जब भी कनारे पे सफीना मेरा पहुँचा–
तूफान ने सर पीटा है लहरो से सवाया।

अनजान हमे यार की ग्रागोश मिली क्या–
जागे न मुग्रज्ज़िन ने हमे लाख जगाया।

❀

पहली ही मुलाकात मे जो अपने लगे हैं-
अब जान से प्यारे वो हमे लगने लगे हैं।

खुदगरजी के इस दौर मे खुद्दारी के अफसाने-
हम जैसे ही चद लोग हैं जो लिखने लगे हैं।

क्यो जख्मो के भर जाने का देते हो दिलासा-
नाखून जो उस यार के फिर बढने लगे हैं।

चलिये कि जरा रौनकें-बाजार तो देखें-
कल तक जो खरीदार थे वो बिकने लगे हैं।

बदले हुए हालात मे जब हम ही न बदले-
बेअक्ल सभी लोग हमे कहने लगे हैं।

हो उठेगी सरसब्ज जमी लगता है ऐसा-
आकाश पे बादल वो घने घिरने लगे हैं।

'अनजान मुहब्बत के बिना जीना है मुश्किल-
ये सोच के अब आप पे हम मरने लगे हैं।

❀

यूं ही मिलते-मिलाते रहियेगा-
याद अपनी दिलाते रहियेगा।

जिन्दगी का सफर तवील नहीं-
हो भी तो मुस्कुराते रहियेगा।

जिससे तस्कीन दिल को हासिल हो-
गीत वो गुनगुनाते रहियेगा।

हमको साबित कदम ही पाओगे-
आप तूफां उठाते रहियेगा।

ये शबे-तार खत्म भी होगी-
दीप दिल का जलाते रहियेगा।

गर जरूरत पड़े लहू देकर-
फूल हर-सू खिलाते रहियेगा।

तुमको महसूस हो अगर राहत-
तो मुसलसिल सताते रहियेगा।

लाख दुश्वारियां हो राहो मे-
पांव आगे बढ़ाते रहियेगा।

हम तो 'अनजान' हो रहे हैं विदा-
आप 'आंसू' बहाते रहियेगा।

❀

शबे-तारीक से हर हाल मे लडना जरूरी है-
नुमूदे-सुबह की जद्दोजहद, करना जरूरी है।

यहाँ हसना मुनासिब है न रोने की इजाजत है-
मगर आहो पे पावन्दी नही, भरना जरूरी है।

न जाना पास शजरे-मम्नूआ के याद रख आदम-
है हुक्मे-एजदी गर खुल्द मे रहना जरूरी है।

मुझे मालूम है कि मुत्तफिक होंगे न वो हरगिज-
मगर जो वात है दिल मे, उसे कहना जरूरी है।

मुझे मन्जिल मिले या न मिले कब फिक्र की मैंने-
मगर जौके-सफर दिल मे लिये चलना जरूरी है।

अधेरा दूर हो पाये कि न हो मुझको क्या लेना-
मगर मेरे लिये तो रात भर जलना जरूरी है।

मैं अब अनजान जीने का करीना सीख आया हूँ-
जीयो जीने को लेकिन वक्त पे मरना जरूरी है।

❀

हादसाते-हयात मे शामिल गजलों के कुछ उर्दू-फारसी-अरबी लफ्जो का हिन्दी तर्जुमा (हिन्दी अर्थ/भावार्थ)

गज़ल न 1 —राहबर=मार्गदर्शक, सदायें=आवाजें, दस्तक=खटखटाना, वा=खुला हुआ, हादसा=दुर्घटना, कैदो-कफस=कारागार व पिंजरा, राहतपज़ीर=शांतिदायक, तुख्म=बीज, रूपोश=अदृश्य/विलीन, शजर=वृक्ष, सरबुलन्द=प्रतिष्ठित/ऊँचा सिर किये हुए, कत्लगाह=वधस्थल।

2 —कोहे-तूर=तूर पर्वत (सीरिया मे एक पर्वत जिस पर हजरत मूसा ने ईश्वरीय प्रकाश देखा था), जलवा=दर्शन/छवि, कद्रदानो=गुणग्राहक/सत्कार करने वाले, मुसलसिल=निरंतर, आईना=दर्पण, बेसूद=व्यर्थ, खूने-नाहक=निर्दोष का रक्त, बारहा=बार बार, दामन=आंचल।

3 —शबाब=यौवन, गोया=मानो/जैसे, गुरुबे-वक्त=डूबने का समय, आफताब=सूर्य, ताब=शक्ति, बेहिजाब=घूघट रहित, सियाही=कालापन/अंधेरा, आब=पानी/चमक, नजूमी=ज्योतिषी, ख्वाब=स्वप्न मीरे-कारवान=अग्रगण्य/काफिले का सरदार।

4 —सरफरोशी=जाँनिसारी/जान की बाज़ी लगाना, आरजू=अभिलाषा, सू-ए-मक्तल=वधस्थल की ओर, दीवाने=प्रेमी/उन्मादी, जुल्फे-दराज=लम्बे केशराशि, साया=छाया, वीराने=जंगल, अहले-दानिश=बुद्धिमान।

5 —गमे-तनहाई=एकांत की पीड़ा, शुआएं=रश्मियां/किरणें, नूर=प्रकाश, दरीचों=खिड़कियों/झरोखों, जुबां=वाणी, मुयस्सर=उपलब्ध/प्राप्य, रायगां=व्यर्थ/निष्फल, दास्तां=गाथा/कहानी।

6 —वाकिफ-परिचित, आश्नाई=मैत्री/लगाव, दारो-रसन=सूली और फांसी का फंदा, गो=यद्यपि, बेशुमार=अगणित, अंजुमन=सभा/महफिल, फरहादे-कोहकन=शीरी का प्रेमी, जुनूं=उन्माद/विक्षिप्तता, फिदा=निसार/न्योछावर, वाबस्ता=सम्बद्ध,

दौरे-असीरी=बंदीकाल, रूदादे-इश्क=प्रेम कथा, गोरो-कफन=कब्र और मृतक का वस्त्र।

7 —महरूम=वंचित/निराश, महफूज=सुरक्षित, सतायश गरों=प्रशंसकों, सरजद=घटित, गुनाह=अपराध, पनाहों=शरण।

8 —पाया-ए-अर्श=अर्श का पाया/ईश्वरीय सिंहासन का स्तम्भ, असर=प्रभाव, पर्दा-ए-हया=लज्जावरण।

9 —दौर=युग, सिम्त=दिशा, तामीर=निर्माण, आगाज= प्रारंभ, रंज=पीड़ा, तलब=इच्छा, दीद=दर्शन।

10 —रास=पसंद, दैर=बुतखाना/मन्दिर, हरम=खुदा का घर/मस्जिद, मयकदा=मदिरालय, सहरा=रेगिस्तान/अरण्य, आसरा= सहारा/अवलम्ब, बकौले-गैर=अन्य के कहे अनुसार, खफा=नाराज/ रुष्ट, तजकरा=वार्तालाप।

11 —खित्ता ए खारजार=कांटों से परिपूर्ण क्षेत्र, राहे-फना=मृत्युमार्ग, हमकदम=सहगामी, ख्वाबे-दीदारे यार=प्रिय-दर्शन का स्वप्न, रूह=आत्मा, जिस्म=शरीर/बदन।

12 —जख्म=घाव, काबिले-इश्क=प्रेम करने योग्य, बिलयकीं= निस्संदेह, शिद्दते गम=अत्यधिक कष्ट, फिजूल=व्यर्थ/अर्थहीन, सजा=दण्ड।

13 —तनहाई=एकांत, अलल-सुबह=प्रात काल।

14 —दर=दरवाजा/चौखट, हर्गिज=कदापि, खाकसारी= विनम्रता/रेत के समान, जुनून-इश्क=प्रेमोन्माद।

16 —बरहना पा नंगे पैर, जब=शोभनीय, सरमाया= सामान, मुतलाशी=खोज में, सरो-कद=आकार/आकृति, आकिलों= बुद्धिमानों, मंजिले मकसूद=वह स्थान जहां पहुंचना है/गन्तव्य।

18 —सियासत=राजनीति, शजग=नरक, जन्नत=स्वर्ग, नसीहत=उपदेश, ममरूफ=व्यस्त/संलग्न, नासह=उपदेशक।

19 —आगार=मकान, मसनदे-इंसाफ=न्यायासन, गद्दार=

शिकारी/वहेलिया, हुनर=कौशल, खार=काटे, पैगाम=सन्देश, वादे-सबा=सुगंधित पुर्वा हवा, गुलशन=उद्यान, शररबार=आग बरसाने वाले, मसीहा=मृत को जीवित करने वाला।

20 —बशर=मानव, परवाज़=उडान, अव्वल=अग्रणी/प्रथम, बे-वालो पर=पंखविहीन, गौहर=मोती, महबूबतर=प्रियतम।

21 —ख्वाबे-गफ्लत=गहरी नींद, नाखुदा=मल्लाह, बज्मे-ऐशो-तरब=विलास की सभा, कमबख्त=हतभाग्य/अभागा।

22 —पहलू=पार्श्व/पसली, चाह=चाहत/प्यार, राह=मार्ग, निगाह=दृष्टि, खानाबदोश=बेघर/संचारजीवी, तबाह=नष्ट, बारगाह=दरबार/राजमहल।

24 —बेबाकियां=धृष्टताए/खुलापन, सरे-बज्म=सभा मे, तजदीद=नवीनता, परस्तार=पूजक/मानने वाले, माज़ी=भूतकाल, दिगर=पृथक/अन्य।

25 —बर्गो-समर=पत्ते और फल, फलक=आकाश।

26 —साजिशों=षडयन्त्रो, फरार=भागे हुए, आबशार=झरना/प्रपात, बावकार=स्वाभिमानी, क्यामत=प्रलय, मजार=कब्र, जद=निशाना/सामना/पकड, आहनी सी=लोहे की, संग=पत्थर/पाषाण, शरार=अग्निकण/चिन्गारियां।

27 -ताउम्र=आजीवन, आदाब=शिष्टाचार, गदाओं=याचकों/भिखारियो, लासानी=अद्वितीय, अनुपम, पस्ती=निचाई।

30 -आशना=परिचित/जानकार, मिस्ल=तरह/समान, तीरगी=अंधकार, दरम्यां=बीच मे, शौके-दीदार=देखने की उत्कंठा, सिवा=अधिक कीमिया=सफल/पारस, पारसा=चरित्रवान/सदाचारी।

31 -अदा-ए-बेनियाजी=लापरवाही का हावभाव/चुलबुलापन, सानी=दूसरा/तुलना योग्य, मुक्द्दर=भाग्य/प्रारब्ध।

32 —दानिशवरां-बुद्धिमानो/समझदारो, देरो-हरम=मन्दिर और मस्जिद, शाहराहो=राजमार्गो, गामजन=चलता हुआ, जा-ए-मर्ग=मृत्यु का स्थान।

33 —कमर=चन्द्रमा, नाआश्ना=अपरिचित, खौफो-खतर=डर भय/शका, सैलाबे-तकल्लुम=बातचीत करने की उत्कठा, शीरीं-बयानी= मधुर भाषण, दर्स=शिक्षा/उपदेश ।

34 —हासिल=प्राप्त, तसल्लीबख्श=सान्त्वनादायक, गाफिल= सज्ञाहीन/बेखबर, फहरिस्त=सूची/विवरणिका, नमूदे-सुबह=सवेरा प्रकट होना, जमीर=अत करण, कौले-बातिल=असत्य वचन, जाने-बिस्मिल=घायल प्राण ।

36 – बशर=मानव, मा'त्बर=विश्वस्त, दरगुजर=अनदेखा करना/टालना, राहजनो=लुटेरो, बेशजर=वृक्षविहीन, बेखतर= सकटरहित, मुख्तसर=सक्षिप्त ।

39 —तनहा=अकेला, साहिल=तट/किनारा, साइल=भिक्षुक/ याचक, बेमिस्ल=अनुपम, नक्शे-कदम=पदचिन्ह, खन्दा-पेशानी= स्मितमुख/प्रसन्न मुद्रा, निदामत=लज्जा/शर्मिन्दगी, आगाज=प्रारम्भ, अन्जाम=अन्त/परिणाम, अहले-दानिश=बुद्धिमान/समझदार ।

40 —तोहमतें=आरोप/दोष लगाना, गुमा=भ्रम, बेहिजाब=घूघट खोले हुए/बेपर्दा ।

41 —बाजगश्त=अनुगूज/वापसी, उजलत=शीघ्रता/जल्दी, परचम= पताका, अजमत=महिमा/महत्व ।

42 —बरपा=उपस्थित/खडा हुआ, इख्तियार=वश शमशीरे-आबदार=काट करने वाली तलवार, वक्फ-ईश्वरार्पण/उत्सर्ग, रहमत=दया/अनुकम्पा, गवारा=रुचिकर/स्वीकार्य, उम्रे-रफ्ता=विगत आयु, दावरे-हश्र=ईश्वर/कयामत के दिन इसाफ करने वाला ।

43 —कायनात=ससार / ब्रह्माड, गायबाना=अदृश्य / परोक्ष, हिजाब=ओट/पर्दा, सागरे-मय=मदिरा पात्र, तीरगी=अधेरा/तिमिर, हस्ती=अस्तित्व/जीवन ।

44 —बेताब=व्यग्र, नाजिल=उतरने वाला, शकिस्ता=भग्न/

जीण शीण, मौजे-तलातुम=तूफानी लहरें, लम्हा=क्षण, रास=पसद, अश्को=आसुओ, परहेज=अलग रहना/निषेध, रूहे-रवा=प्राण वायु।

45 —होशो-खिर्द=चेतना और बुद्धि, वाइज=धर्मोपदेशक, मिसरा-ए-अव्वल=शे'र की प्रथम पक्ति, दोयम=द्वितीय, दोगाने=दो लोगो द्वारा गाया गीत।

46 —बलाओ=विपत्तियो, मानूस=हिला-मिला/परिचित, तार-तार=चिथडे=चिथडे, हमकनार=सम्बद्ध, आबदार=आभावान, नामो-नामूस=यश और प्रतिष्ठा, सुर्खरू=सम्मानित/निर्दोष, अज्मे-तामीरे-आशिया=नीड निर्माण का सकल्प, बर्के-शोलाबार=अग्निवर्षक बिजली।

47 — परिन्दा=पक्षी, सगदिल=पाषाणहृदय, मुखालिफ=विरोधी/विपरीत, तल्खी ए-जीस्त =जीवन की कडवाहट।

48 दार =सूली, कैदो-कफस =कारागार और बधन, वीराने-जगल, सूदो-जिया =लाभ-हानि, गिला =उपालम्भ/शिकायत सबात =दृढना, उसूल =नियम, शेरे-नर =बहादुर/नर सिंह, कोहराम =हाहाकार/शोरोगुल/वावैला, गैर= पराया।

49 —हिकायते-दर्द =व्यथा-वृतात, शुक्र =धन्यवाद, आबलो =पाव के छालो/फफोलो, रूनुमा =चेहरा दिखाई देना, नक्श =अकित।

50 —आखिरश =अतत, गुन्चा =कली, शै =वस्तु, चाक =फटा हुआ, गरेबान =कुर्ते-कमीज आदि का गला, गैर मुमकिन =असभव, खेमाजन =शिविर लगाना/तम्बू गाडना, हक-परस्त =सत्य के पुजारी/सत्यनिष्ठ, उमर-बिन-साद =यजीद की सेना का अधिकारी, तुलू =उदय।

51 —बुलन्दी =उच्चता, पस्त =दबे-कुचले, तुख्मे-नफरत =घृणा का बीज, गर्दिशे-वक्त =समय का चक्कर, कारगर =प्रभावी, महरूमे-ताबीर =स्वप्न जो सच न हो, शरपसन्दो =आतकवादियो/कलहप्रियो, दगा =विश्वासघात।

53 —सिला =बदला/पुरस्कार/प्रतिकार, मजमून =लेख/विषय,

मरफी = छिपा हुआ/गुप्त, हयात = जीवन, दौरे-खजा = पतझड़ का समय, अर्शे-मुअल्ला = ईश्वर का सिंहासन ।

54 —महमूद = सुलतान महमूद गजनवी, अयाज = गजनवी का प्रिय दास, नाजनीने-मिस्र = मिस्र की सुंदरियां, जुलेखा = मिस्र की महारानी जो हजरत युसुफ पर आसक्त हो गई, गश = मूर्छा, हवास = चेतना, कलीम = हजरत मूसा, आशकारा = प्रकट, शदीद = तीव्र वजूद = अस्तित्व, अब्र = बादल ।

55 —इबलीस की औलाद = शैतान की संतान/दैत्य-संतति, तवारीख = इतिहास, जुलमत = अंधकार शिद्दत = तीव्रता, दरिन्दों = हिंस्र पशुओं/जानवरों, दहशत = भय ।

56 —अन्दाज = पद्धति/तरीका, मसरूर = आनंदित/प्रफुल्ल, अफलाक जेरे-पा = पावों के नीचे सभी आकाश, परवाज = उड़ान, यकीन = विश्वास, अल्फाज = शब्द दरगुजर = अनदेखा करना ।

57 —शोर = कोलाहल, दरिया = नदी अव्वल = प्रथम, शै = वस्तु, शोख-जमालों = चंचल सुंदरियां, हैरान = आश्चर्यचकित, बामो-दर = छत और द्वार, ख्वाहिश = लालसा, लाजिम = उचित/अनिवार्य ।

58 —उम्मीद = आशा, तस्कीन = शांति, हसरत = इच्छा, तलातुमखेज मौजों = तूफान उठाने वाली तरंगें, हद्दे-साहिल = तट की सीमा, इन्कलाबात = परिवर्तन/बदलाव, निगाहे-मेहर = दया-दृष्टि ।

60 —तखय्युल = विचार, मुकद्दर = भाग्य/प्रारब्ध, अन्दाज = तरीका, नहूसत = उदासी/अमांगलिकता, गवारा = स्वीकार ।

61 —नजदीक = समीप, मखसूस = घनिष्ठ/खास, गो = यद्यपि ।

62 —तीमारदारी = रोगी की सेवा/परिचर्या, मुद्दाआ = अर्थ/उद्देश्य, खुमारी = नशा, आमदे फस्ले-गुल = वसंत का आगमन, वक्ते-सहरी - सुबह का समय/रोजा रखने का समय, इफ्तेयारी = रोजा खोलने का समय, गमगुसारी = सहानुभूति/हमदर्दी, जख्मे-कारी = गहरा घाव ।

64 —मुजरिम = अपराधी, मुन्सिफ = न्यायकर्ता, उजलत =

शीघ्रता, शब=रात्रि, माहिर-निपुण/सक्षम, जाया=नष्ट/व्यर्थ, कराहत=अरुचि/उदासीनता।

65 —फर्क=अंतर, खासो आम=असाधारण एव साधारण/विशेष/सामान्य, कुहना=पुराना, निजाम=व्यवस्था, अवाम=प्रजाजन, वर=पूर्ण होना, बारगाह=दरबार/शाही मकान, अजमत=महिमा/सम्मान, ईमाम=नमाज पढाने वाला, मानिन्दे-फर्शे-राह=विनीत/रास्ते मे बिछी हुई-सी, इन्तजाम=प्रबंध, दाम=फंद/जाल, इसरार=आग्रह, मुहाल=कठिन, इजहार=स्वीकारोक्ति/प्रकट होना या करना, पयाम=सदेश, तहसीने-जाम=मदिरा के प्याले की प्रशसा।

66 —सरे-आम=खुल्लमखुल्ला/सबके सामने, खाम=बेकार, इलहाम=देववाणी, कुन=होजा ये शब्द ईश्वर की तरफ से थे जिनसे सृष्टि की रचना हुई।

67 —बे-परी=पखहीनता, नाज=अभिमान/घमण्ड, मुज्दा=सुसमाचार, पनाह=शरण, बाहम=पारस्परिक, कौलो-करार=वादा/कथन की स्थिरता, पैरोकार=पक्षकार, इत्तेहाद=एकता, मन्जर=दृश्य, इन्तेशार=बिखराव।

69 —जज्बात=भावुकता, बेसाख्ता=सहसा, मक्तूल=वधित/जिसका कत्ल किया गया हो।

70 —रज=कष्ट, जुज=अतिरिक्त/अलावा, तामील=आज्ञा का पालन निष्पादन, इरशाद=आज्ञा/आदेश, जुर्म=अपराध, असीरो=बदियो/कैदियो, दिलशाद=खुश/प्रसन्न चित्त।

71 —खिताब=उपाधि, हादसाते-हयात=जीवन की दुघटनायें/जीवन की नई घटनायें, ताबीर=स्वप्न का परिणाम, मुगन्नी=गाने वाला/गायक, रबाब=सितार के प्रकार का एक बाजा/वाद्ययत्र, उक्बा=परलोक सुखरू=प्रसन्न/निष्कलक, महशर=न्याय का दिन, यजदा=ईश्वर, बेखौफ=निडर, कमखाब=एक प्रकार का बहुमूल्य कपडा/मखमल, कुहना निजाम=पुरातन प्रबंध, दस्तूरे-दुनिया=सासारिक नियमोपनियम।

72 —नाग्राश्ना = ग्रपरिचित/ग्रनजान/ग्रजनबी, तूफाने-तुन्द = तेज तूफान/तीव्र प्लावन, रू-ब रू = स मुख/ग्रामने–सामने।

73 —लुत्फ = ग्रानन्द पेंचो खम = वक्रता/घुमावदार, गुमरही = ग्रज्ञानता, चरागे-दहर = सांसारिक दीपक, तीरगी = ग्रधकार, काफिर = सत्य को झुठलाने वाला, बदगी = ग्राराधना।

74 —सिफ्ते-फरहाद = फरहाद (शीरी का प्रेमी) की विशेषता, कैस = लैला का प्रेमी 'मजनू' प्रसिद्ध है, रि द-बलानोश = बहुत ग्रधिक पीने वाला, सगे-बुनियाद = नीव का पत्थर, मे'राजे-मुहब्बत = प्रेम का चरमोत्कर्ष/प्रेम की पराकाष्ठा।

75 —सरगर्मे-बगावत = क्राति करने को तत्पर, गुल-बर्गो-समर = पुष्प, पत्ते एव फल, बेजार = ग्रप्रसन्न/क्रुद्ध, सहर = सवेरा, सैलाब = तीव्र जल प्लावन/बाढ, सौगद = शपथ।

76 — मुहब्बत नवाज = प्यार बढाने वाले, खुशमिजाज = प्रसन्न चित्त, तर्जे-नमाज = पूजा-पद्धति, उनवान = शीर्षक, ला-इलाज = जिसका उपचार न हो सके थाज़ = कुछ/थोडे, हकपरस्ती = सत्यनिष्ठा।

77 – नज्रे-हवादिस = घटनाम्रो के भेंट चढना, बुज़दिलो = कायरो, रब्ते-वाहम = पारस्परिक लगाव/ग्रापसी प्रेम, ग्रदम-मौजूद = गायब/ग्रनुपस्थित।

78 —बुतशिकन = मूर्तिभजक, परस्तारो = पूजने वाले, दौरे-हुकूमत = शासनकाल, खू रवारा = रक्तपिपासुम्रो, गुलिस्ता/उद्यान।

79 —बेरुखी = उदासीनता, सद = ठडी, ग्रस्सलातो-खैरुम्-मेनन्-नोम = नमाज (पूजा) नीद से श्रेष्ठ है, मोग्रज्जिन = ग्रजान देने वाला, सदा = पुकार, मस्लहतन = कारणवश, हराम = वर्जित, कौल = कथन, मेहरो-करम = उपकार, नासेह = उपदेशक, मानिन्द – सदृश/समान।

80 —रा'नाइया = छटायें, दुश्वारिया = कठिनाइया, सोहबत = सग, हाशिये = किनारे, बेजा = ग्रसगत/बेतुका/ग्रनुचित, सुर्खिया =

मुख्य समाचार, मुबर्रा= मुक्त/पवित्र, खूबियां= गुण, आलीजाहो= सम्राटो/बड़े रुत्बे वाले लोग, खुल्द= स्वर्ग।

81 – आफताब= सूर्य, माहताब= चद्रमा, आरिज=गाल/कपोल, ताजिराना= व्यापारियो जैसा, आखिरे-शब= रात्रि का अतिम पहर, लहू= रक्त, आब= पानी।

82 —वाबस्ता= जुड़ा हुआ/सम्बद्ध, अमनो-अमान= सुख-शाति, दरहमो-बरहम= मस्त-व्यस्त, कश्ती-ए-हयात= जीवन नौका, नूर= प्रकाश/चमक, कमर= चद्रमा, आतिश= अग्नि, शबे-फिराक= वियोग-रात्रि, इबादत= पूजा/आराधना, दीदा-ए-तर =भीगी आँखें, तासीर= प्रभाव/असर, बादे-सहर =प्रात कालीन वायु, सौदा =पागलपन।

83 —कारखाने-जीस्त= जिदगी का कारवा मिस्ले-चराग= दीपक की तरह, शादमा= खुश/प्रसन्न, कर्ज= ऋण।

84 —आस्ताने= चौखट/यार की देहलीज, हासिले-हयात= जीवन का उद्देश्य, सागरो-खुम= मदिरा का प्याला और मदिरा-घट, असीरे-कफस= पिंजरे मे बदी, गुलशन= बाग/उद्यान।

85 —बदहवास= हतबुद्धि/उद्विग्न, दिलरुबा= चित्तचोर/प्रेमिका, गर्क = डूबा हुआ, जामो-मीना= मदिरा का प्याला और मदिरा का बड़ा पात्र (जग), पारसा= पवित्र/गुनाह से बचने वाला।

86 —इस गजल के ज्यादातर अशआर कुरआन और महाभारत मे उल्लिखित घटनाओ के परिप्रेक्ष्य मे समझे जा सकते हैं।

अफलाक=आकाश-समूह गर्दिश=कालचक्र/दुर्भाग्य, फानी=नश्वर, मस्जूदे-मलाइक=देवदूतो के लिये पूजनीय, शर्मसार=लज्जित, मासूम=भोलीभाली, हव्वा=ससार की पहली स्त्री, आदम=ससार का पहला पुरुष, गन्दुम=गेहूँ, तलबगार=अभिलाषी, यजदा=ईश्वर, खुल्दे-बरी=सर्वोच्च सातवा स्वर्ग, सलीब=सूली/त्रास, सरचश्मा ए-रहमत=दया का झरना/कृपास्रोत, रवा=प्रवाहित, तीरो के बिस्तर= शरशय्या, जग=युद्ध, जफाकश=कष्ट उठाने वाला, जफाकार=पीड़ा पहुचाने वाला।

87 —वेखौफ=निर्भय, हक=कर्त्तव्य, यकीनन=विश्वासपूर्वक, ग्रदा=पालना किया हुआ, सर-ता-पा=सिर से पैर तक, तफसील=विस्तार, मायूस=निराश, अन्दलीव=बुलबुल, दौरे-खजा=पतझड, गुल=पुष्प, इत्तेफाक=संयोग/अचानक, नालाए रसा=निरंतर रोते रहना, वदौलत=कारण से, अता=प्राप्त, मतलूव=वांछित, हरगिज=कभी नहीं, रोशनाई=सियाही, मसि नैजे=भाला/शकु, जवरन=वलात्, तुरवत=कब्र/समाधि कत्वा=कब्र पर लगाया जाने वाला पत्थर, नसीव=भाग्य।

88 —होशो-खिद=चेतना और बुद्धि दुरस्त=ठीक/सही-सलामत, लब्बैक=मैं उपस्थित हूं/हाजिर हुआ अम्वाते-नागहानी=आकस्मिक मौतें, दुख्तरों=वटियों नजरे-हिकारत=हेय-दृष्टि, अब्तर=निम्न/क्षुद्र, वेहतरों- श्रेष्ठजनों।

89 – जानू-ए-दिलदार=मित्र का घुटना, तहम्मुल=धैर्य/सहिष्णुता, आशियाने=नीड/घोसला, सरसब्ज=हरी-भरी/उपजाऊ, हिज्र=विरह/वियोग।

90 – तमन्नाई=इच्छुक, शैदाई=आसक्त/प्रेमी, रुख्सत=विदा/रवाना, मरसिया=मृतक का गुणगान, सौदाई=उन्मादी/पगलाया व्यक्ति।

91 —शवे-फुरकत=विरह की रात्रि, दस्ते यार=प्रियदर्शन, दिले-नादान=नासमझ मन, शकिस्ता=जर्जर, नाखुदा=मल्लाह/नाविक, फीले-वेजंजीर=शृंखला मुक्त हाथी, दिले-अफसुर्दा=खिन्न चित्त/बुझा मन, एहसान=उपकार, फरिश्ता-सिफ्त=देवदूतों जैसी विशेषता, नापैद=अनुत्पन्न/गायब, कजअदाई=टेढ़ापन/दुशीलता, मशक्कत=परिश्रम/मेहनत देहकान=किसान/देहाती मरीजे-दिल=हृदय रोगी, यगाना=अकेला/अद्वितीय, फन=कौशल/हुनर, लुकमान=विख्यात वैद्य/हकीम, खुशामद=चापलूसी।

92 —मुवर्रा=पवित्र/वरी किया हुआ/वेऐब, आखिरश=अन्ततोगत्वा।

93 —हमसायो-पडोसियो, नौगिरिफ्तारो =नये-नये बदीजन, कैफो मस्ती =आनद और प्रसन्नता, नजात =छुटकारा/मुक्ति, तिश्नालब =प्यासा।

94 —नाला-ए-नीम-शब =अर्द्ध रात्रि का विलाप, कासिद =डाकिया / समाचार पहुचाने वाला, रकीबो =प्रतिद्वद्वियो/प्रतिप्रेमियो, तौबा पश्चाताप/पछतावा/बुरा कार्य न करने की प्रतिज्ञा, शऊर =आचरण/ढग, सदमा =आघात, उरियानगी ए-जिस्म =शारीरिक नग्नता, फरजन्दे-आफताब =सूर्यपुत्र, बेदाग =निष्कलक।

95 —करीने =ढग/शिष्टता, रूदादे-इश्क =प्रेम-कथा, नाजुकतरीन =अत्यधिक कोमल, रिश्ता-ए-दोस्ती =मित्रता का सबध, सख्त =कठोर, नमूदार =व्यक्त/आविभू त।

96 —काश =खुदा करे/ऐसा होता, बख्ते-खुफ्ता =सुसुप्त भाग्य/सोई हुई किस्मत, बेदार =जागना/जाग्रत, आबला-पाई =पैरो के छाले, मयस्सर =प्राप्त, पुरखार =काटो से भरी हुई/कटक-सकुल, दुश्वार =दुरूह/कठिन, दरअसल =वास्तव मे, हकगोई =सत्यकथन, जाकनी =यम-यातना/शरीर से प्राण निकलने की अवस्था।

98 —लम्हात =क्षण, दर पर्दा-ए-नफरत =घृणा की ओट मे, बज्मे-तखय्युल =कल्पनाओ की सभा, बज्मे-अदू =शत्रुओ की सभा, कुल्फत =पीडा कजा =मृत्यु/मौत, फरजानो =होशियारो/बुद्धिमानो, सफ =पक्ति/कतार।

99 - खाना ए दिल =मन मन्दिर, नीम-शब =अर्द्ध रात्रि, बेअसर =अप्रभावी।

100 —ताब =सहनशक्ति/सामर्थ्य, जब्त =सहनशीलता/सयम, तल्खियो =कडवाहटो/खारापन, जफ =सहनशीलता, खयाले-मयकशी =मदिरापान का विचार, लबो =अधरो, मुहाल =असभव/दुष्कर, खौफे-आबला-पाई =पावो के छालो का भय, हुदूदे-इश्क =प्यार की सीमायें, दयारे-इश्क =प्रेमगृह/प्यार का स्थान, होशमन्दी =चेतना हराम =निषिद्ध, बेखुदी =अचैतन्य/बेखबरी, हरीमे-नाज =प्रेयसी का घर, दस =शिक्षा/सदुपदेश।

101 —अहदे-शबाब =यौवनकाल/युवावस्था, बेशुमार = असख्य, इकरारे-जुर्म =अपराध स्वीकारना, सदका =सिर से कोई चीज दान करने के लिए उतारना, अख्लाक =गुण/विशेषतायें, परवरदिगार =ईश्वर/विश्वम्भर, बागे-दरा =अत करण की पुकार।

102 —कलम =लेखनी, उरुजे-हुस्न =सौंदर्य का उत्थान, जवाल =ह्रास/पतन, लाजवाल =अपतनीय/जिसका ह्रास न हो, आने-वाहिद =एक क्षण, हाले-विसाल =मिलन का वर्णन, रौनक =चहल-पहल/प्रसन्नता, खस्ताहाल =दरिद्र/अकिंचन, रोशन-खयाल =दीप्त प्रज्ञ/उज्ज्वल विचारो वाला/प्रज्ञावान।

103 —शोर =कोलाहल/हुल्लड, बुलन्दो-पस्ती =ऊच-नीच/ऊपर-नीचे, पापोश =पादुका/जूता, रुखे जमील =सुन्दर मुखाकृति, दिलो-दमाग =मन-मस्तिष्क, पाबोस =पाव चूमने वाला/पदचुम्बक, मुरीद =शिष्य, पीरे-मुगा =मधुशाला का स्वामी, मुसल्ला =नमाज पढने की दरी या चटाई, मयनोश =शराबी/मदिरा पीने वाला, गमो-निशात =दुख-सुख, बेलौस =निस्पृह/निर्लिप्त, बाहोश =चेतन।

104 —दरमिया =बीच मे फासिले/दूरिया, जुम्बिश =हिलना/कम्पन, वस्ल =मिलन।

105 —वहम-भ्रम, चश्मे-दिल =मन चक्षु सुर्ख =लाल/रक्तिम, खारजार =कटकारण्य, पायेदार =स्थिर/दृढ, खाक =रज/रेत/मिट्टी।

106 —तिश्नगी =तृष्णा/प्यास, देहका =किसान/देहाती, सुबहे-रोशन =उज्ज्वल सवेरा, इज्राईल =यमराज/मौत का फरिश्ता।

107 —अगयार =पराये लोग, एतबार =भरोसा/विश्वास, हद्दे-नजर =दृष्टि-सीमा, दरिया-ओ-आबशार =नदी और झरना/जलस्रोत।

109 —गरफानी =अनश्वर, तख्लीक =रचना/सृजन, चश्मे-पत्थर =पाषाण-चक्षु तर्जुमानी =अभिव्यक्ति।

110 —हिम्मतो-अज्मो-हौसला =साहस, सकल्प और उत्साह, सिम्ते-मजिल =गन्तव्य की ओर, मुद्दोआ =आशय/मनोभाव, पेशतर =पूर्व मे/पहले, सोहबत =सगत।

111 — जश्न = उत्सव/समारोह, कत्ले-ग्राम = सर्वसाधारण का वध, उसूल = नियम/आदश, लाश = मृत शरीर।

112 — जर्द = पीले/मुरझाये हुए, वतन = मातृभूमि, हर्फ = शब्द/अक्षर, तनहा = एकाकी/अकेला।

113 — फलसफी = दार्शनिक/फिलोस्फर, फलसफा = दर्शन/तर्क शास्त्र, अदना-ओ-आला = बहुत छोटा और बडा, जनाजे = शव-यात्रा, शरीक = सम्मिलित/भागीदार, इस्तकबाल = स्वागत-सत्कार, मुज्दा-ए-फस्ले-बहारां = बसंत ऋतु के आगमन का सुसमाचार, गुन्चा-ए-दिल = मन की कली।

116 — शबगुज़ार = रात्रि साथ बिताने वाला, खुलूस = निष्कपटता/निश्छलता, तवील = लम्बी/दीर्घ, शाख = लता/डाली, शबो-रोज = रात दिन, अदू = शत्रु/वैरभाव रखने वाला।

117 — नफस = क्षण/पल/श्वास, हुसूले-ज़िन्दगी = जीवन का निष्कर्ष, पेश = प्रस्तुत, जानेमन = प्राणप्रिय ख्वाबगाह = शयनागार, दिलफरेब = मन को मोह लेने वाला, वजूद = अस्तित्व, तोहमतें = आक्षेप, वजह = कारण, सुरूर = हर्ष/हलका नशा, खुमार = तेज नशा/उन्माद, गुरेज़ = उपेक्षा/घृणा/इन्कार।

119 — ज़र्रे-ज़र्रे = कण-कण रब्ते-बाहम = परस्पर मेल-जोल।

120 - मबहूम = धुंधली, साये सी = परछाई-सी, हैरान = चकित, खानाखराबा = अभागो, लरजती - कांपती।

121 — अज़ीज़ = प्यारा/स्वजन, मन्ज़ूरे-नजर = दृष्टव्य, आरामे-जा = प्राणों को सुख देने वाला।

122 — पारा पारा = टुकडे टुकडे, आश्कारा = प्रकट, शरारा = अग्निकण, खल्वतनशी = एकांतवासी।

123 — आहिस्तगी = धीरे-धीरे, नापसंदीदगी = अरुचि, सदहा = शत-शत/सकडा, तहरीर = लिखावट/हस्तलिपि, कबा = दोहरा लंबा अगरखा/गाउन, हदें = सीमायें, वाबस्ता = सम्बद्ध, जुडा हुआ।

124 — मलकुलमौत = यमराज, तिफल = बच्चा, नालाकश = विलाप करने वाला/फरियाद करने वाला।

126 — सितमपेशा = अत्याचारी, दौरे-गुजिश्ता = भूतकाल, करदन =

जानबूझकर, गुलजार=उद्यान, सदचाक=सौ-सौ टुकड़े, आराइशे जन्नत =स्वर्ग की समृद्धि/स्वर्ग का सुख-चैन।

127 —गर्दिशे-अय्याम=दिनों का हेर-फेर, खल्वत=एकांत।

128 —माजरा=घटना/वृत्तांत, चारागर=उपचारक/चिकित्सक, मर्ज=रोग, दुआ=ईश्वर से प्रार्थना/ईश-स्तुति।

129 - दिले-मुजतर=व्यथित-हृदय, दिले-नाकाम=हताश हृदय, सुकूते-मर्ग=मौत का सन्नाटा, सदाये-जीस्त=जीवन की पुकार, मन्जर=दृश्य, सागरे=लबरेज=शराब से लबालब प्याला।

131 —विरासत=उत्तराधिकार दाम=जाल/फन्दा, विलादत=जन्म/उत्पत्ति, रंजो-अलम=दुःख-कष्ट, शहादत=बलिदान, कयामत=प्रलय, इबादत-आराधना, मसरूफ=व्यस्त, फुर्सत=अवकाश/सन्तोष, पुर्सिशे-अहवाल=हालचाल पूछना, अलालत=रोग/बीमारी, इन्साफ=न्याय, अदालत=न्यायालय, उज्लत=शीघ्रता/जल्दी, शबे-तार=अंधेरी रात, नूर=प्रकाश/उजाला, तुरबत=कब्र/समाधि, फरियाद=आर्तनाद/दुहाई, कोह=पर्वत/पहाड़, सोहबत=संगत, मे'राजे=मुहब्बत=प्रेम की पराकाष्ठा, इनायत=कृपा/दया।

132 —बेसबब=अकारण, बावर=विश्वास/भरोसा, माजरा=घटना/वृत्तांत, हर आन=प्रत्येक क्षण, मुमकिन=संभव, रूपोश/छिपा हुआ/अदृश्य, मिजाज=तबीअत/मनोदशा, आदत=स्वभाव, कवी=बलवान्/मजबूत, गरीबखाने=निर्धन का घर।

133 - खन्दापेशानी=स्मितमुख सुशील, परिंदों-सा=पक्षियों के समान, आखिरे-शब=रात्रि का अंतिम पहर, दर-ब-दर=द्वार-द्वार, चन्द लम्हे-कुछ पल, बेगुनाही=निर्दोषता/निरपराधता।

134 —बेसाख्ता=सहसा/बिना सोचे हुए, हासिले-हयात=जीवन का उद्देश्य, मजरूह=घायल/आहत, शिफा=रोगमुक्ति, अता=प्रदान/दत्त, अदा=हाव-भाव/भंगिमा/चुकाना/बेबाक।

135 —नादिम=लज्जित/शर्मिन्दा, बेवक्त=असमय, बका ए-गैरफानी=कभी नष्ट न होने वाली नित्यता/अनश्वरता, वजूदे-जिन्दगी=जीवन का अस्तित्व, राज=भेद, शरीके-गम=पीड़ा का संगी-साथी।

136 —आहो-फुगां=रोना-धोना/आर्तनाद, मुहाल=कठिन, निशाने-मन्जिल=गन्तव्य-चिह्न/माइल स्टोन, हैरत=आश्चर्य, वक्त=

तड़ित/बिजली, नशेमन = निवास स्थल/नीड, शाखे–गुल = पुष्प-लता, निस्बत = संबंध/सगाई, दैरो–हरम = मन्दिर-मस्जिद।

137 —गर्दिशे-अय्याम = दिनों का उलट-फेर, राजे-दिली = मन का भेद, अन्दाजा = अनुमान, माहौल = वातावरण, शबिस्तान = शयनागार/सोने का कक्ष, वीरां = उदास/बोझिल, शक्लो–शबाहत = डीलडौल/आकृति, हैरान = आश्चर्यचकित।

138 —रुख = मुख, मीर = मशहूर शाइर, ववते-साज = सितार की जाति का एक वाद्ययंत्र, तल्खी-ए-माहौल = वातावरण की कटुता, बेजार – अप्रसन्न/तंग आया हुआ, रुखे-रोशन = आभायुक्त मुख, अलम = दुःख, मुज्दा ए-वस्ल - दर्शन का सुसमाचार/मिलन की खुशखबरी।

140 —साबित कदम = दृढ़ निश्चय/इरादे में अटल, जलजले = भूकम्प/भूडोल, सुकूं = शांति/आराम नग्माजन = मधुर आवाज में गाना।

141 —संगरेजे = पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े, नजारे = दृश्य, इशारे = संकेत, साजिश = षडयंत्र, शग्ल = कार्य/मन बहलाने का काम, बेमानी-ओ-मक्सद = निरर्थक और उद्देश्यहीन।

142 —मगरूर = अहंकारी/घमंडी, फसाने = कहानी/कथा, परीवश = अप्सराओं जैसी, लबो-अधरों, गुलशन = बाग/पुष्पोद्यान, तमाम = समस्त, खातिर = वास्ते/आव-भगत, नक्श = अंकित/खुदा हुआ।

143 —रास = रुचिकर/पसंद साहिल = किनारा, कातिल = हत्यारा, साइल = याचक, रुखसत = रवाना, गाफिल = असावधान।

144 —जिक्र = चर्चा सोजो साज = दुःख-सुख, बरजस्ता = फौरन/तड़ाक से/तुरंत, दिलनवाज = प्रेमपात्र/महबूब, गर्मी ए इश्क = प्रेम की उष्णता, हुस्न की शोखी = सौंदर्य का चुलबुलापन, जवाल = पतन, मस्लक = रास्ता/मत/पथ, जवाज = औचित्य, रोजनामचे = दैनिकी/प्रतिदिन का हाल लिखने की किताब, दर्ज = लिखा हुआ/प्रविष्ट, खराज = चौथ/लगान, जानिबे-मयखाना = मदिरालय की ओर, दौर-दौरा = चक्कर/सिलसिला, वाइज = धर्मोपदेशक, वाज = धर्मोपदेश, चारासाज = रोग का उपचार करने वाला/चिकित्सक, मुत्मईन = निश्चिंत/बेफिक्र, मरीज = रोगी, फित्नासाज = उपद्रव कराने वाला/भड़काने वाला।

147 —मुन्सिफ=न्यायकर्त्ता, मुजरिम=अपराधी/दोषी, तल्ख=कड़वी, मुब्तिला=ग्रस्त/फसा हुआ, बशर=मानव ।

148 —मुमकिन=सभव/सभाव्य, तर्क-तआल्लुक=सबध-विच्छेद, गवारा=ग्राह्य/स्वीकार्य, बाहमी=आपसी, लज्जत=सुख/आनन्द, मदावा=उपचार, सफीना=नाव/कश्ती, आगोश=गोद/पार्श्व/सामिप्य।

149 —खुदगरजी=स्वार्थपरता/स्वहित, खुद्दारी=स्वाभिमान, चद=थोड़े/विरले, दिलासा=सात्वना, बेअक्ल=बुद्धिहीन/बेवकूफ।

151 —शबे-तारीक=अधेरी रात, नुमूदे-सुबह=सवेरा होना, जद्दोजहद=विशेष प्रयत्न, पाबन्दी=रोक/बन्दिश, शजरे-मम्नूआ=गेहू का वह पेड़ जिसे अल्लाह ने आदम के लिए निषिद्ध कर दिया था, हुक्मे-एजदी=ईश्वरीय आदेश, खुल्द=स्वर्ग, मुत्तफिक=सहमत, फिक्र=चिंता/विचार, जौके-सफर=यात्रा-सुख/यात्रा का रसानुभव, करीना=ढग/तमीज।

तरमीम सशोधन

गजल न	पक्ति न	गलत/अशुद्ध	ठीक/शुद्ध
9	9	रज*	रज
27	11	जा	जो
30	14	काई	कोई
31	1	देखगे	देखेंगे
34	3	जुवा	जुबाँ
34	6	फहरिश्त	फहरिस्त
44	11	रस	रसँ
55	1	इतरा	इतरा
55	7	दे (सारे से पहले छपा नही)	दे (छपना था)
91	9	मजपदाई	मजमाई
91	10	रहपार	देहशर
121	14	तर (बाद मे पहने छपा नही)	तेरे (छपना था)
123	8	उभ तो उभारे दो-	उठे तो उठने दो-
143	5	थाम ही द दी	बोल ही द दा

*शब्द —रज (ज के नीचे बिन्दु) शब्द व इससे बना शब्द जहा भी छपा है वहा रज (बिना बिन्दु) में पढ़ा जाये—मुसन्निफ।